मार्च 2005
Rs. 12 /-
चन्दामामा
इस अंक में
देखिए जी-मैन के
कारनामे
G-man

चन्दामामा सम्पुट - १०८ मार्च २००५ संचिका - ३

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd. to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १४४ रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

धरती के रक्षार्थ अनुशासन

संसार ने हाल में एक बड़ी भयानक त्रासदी देखी, जिसमें ढाई लाख से अधिक लोगों की जानें चली गईं। इसे लोग सुनामी त्रासदी के नाम से जानते हैं, जो ऊँची तीव्रतावाले एक सागरीय भूकम्प का परिणाम था।

इस विपदा के एक महीने के भीतर ही यूरोप के कुछ भागों में और मध्यपूर्व तथा अमरीका में अप्रत्याशित भारी वर्षा हुई। भारत के उत्तरी भागों ने तुषारापात, कोहरे तथा हिमस्खलन का प्रभाव अनुभव किया जिससे सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। उन क्षेत्रों में निरन्तर भूकम्प होते रहे जो सुनामी ज्वार-भाटाओं से प्रभावित हुए थे।

पृथ्वी तथा इसके तत्वों जैसे वातावरण, और भूमि तथा जलराशि की प्रतिक्रियाओं के विषय में विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न व्याख्याएँ दीं तथा कारण बताये हैं। मनुष्यों द्वारा की गई अपनी क्षति के प्रति प्रकृति की प्रतिक्रिया का अपना विधान है।

अब यह अनिवार्य हो गया है कि लोग धरती के रक्षार्थ कुछ अनुशासन का पालन करें। अपने प्रतिवेश को साफ-सुथरा रखने जैसी मामूली चीजें प्रकृति में सन्तुलन बनाये रखने में बहुत सहायक हो सकती हैं, जो भारी मात्रा में वृक्ष कटाई तथा वातावरण और जलमार्गों के प्रदूषण द्वारा प्रभावित हो जाता है। जब भी और जहाँ भी मनुष्य प्रकृति पर हावी होता है, प्रकृति सामने आ जाती है।

आयें, मानव जाति के भविष्य के लिए आगामी २१ मार्च को धरती-दिवस और २२ मार्च को जल-दिवस मनायें।

सम्पादक:विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.org

Statement about Ownership of
AMBULIMAMA (Tamil)
Rule 8 (FormVI). Newspaper (Central) Rules. 1956

1. **Place of Publication**
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
2. **Periodicity of Publication**
   MONTHLY
   1st of each calendar month
3. **Printer's Name**
   B. VISWANATHA REDDI
   Nationality
   INDIAN
   Address
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
4. **Publisher's Name**
   B. VISWANATHA REDDI
   Nationality
   INDIAN
   Address
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
5. **Editor's Name**
   B. VISWANATHA REDDI
   (Viswam)
   Nationality
   INDIAN
   Address
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097
6. Name and Address of individuals who own the newspaper
   Chandamama India Ltd.
   Board of Directors:
   1. P. Sudhir Rao
   2. Vinod Sethi
   3. B. Viswanatha Reddi
   82 Defence Officers Colony
   Ekkatuthangal, Chennai-600 097

I, **B. Viswanatha Reddi,** *do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.*

(Sd.) B. VISWANATHA REDDI
1st March 2005 *Publisher*

साहसी युवक

राजा विजयेंद्र, सिंधु नदी प्रांत के महेंद्रपुरी नामक राज्य का शासक था। उस समय, उत्तरी प्रांत के पर्वतारण्यों से हूण नामक असभ्य जातियाँ महेंद्रपुरी पर आक्रमण करती रहती थीं।

विजयेंद्रवर्मा ऐसे युवकों को ही अपनी सेना में भर्ती करते थे, जो पराक्रमी व साहसी ही नहीं, बल्कि राज्य की रक्षा के लिए अपनी जान भी निछावर करने को सन्नद्ध हों परंतु भर्ती करने के पहले उनके प्रधान मंत्री उन युवकों के पराक्रम और साहस की परीक्षा लेते थे।

एक दिन बीस साल की उम्र का एक युवक राजा के दर्शन करने आया। उसके विचित्र हाव-भावों को देखकर उसका मज़ाक उड़ाते हुए पहरेदारों ने उससे पूछा, ''महाराज से तुम्हारा क्या काम है?'' वह युवक भांप गया कि पहरेदार उसका मज़ाक क्यों उड़ा रहे हैं। उसने नाराज़ होते हुए कहा, ''मेरी बायीं तरफ़ की मूंछ से दायीं तरफ़ की मूंछ छोटी है, इसीलिए तुम लोग हँस रहे हो न? इसके पीछे बड़ी ही साहसपूर्ण कहानी है।'' इस पर पहरेदारों ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''कहो तो सही, वह कहानी क्या है?''

युवक ने कमर में लटकती हुई तलवार की मूठ पर हाथ रखते हुए कहा, ''हर ऐरे-ग़ैरे को यह कहानी सुनायी नहीं जा सकती। इसे सुनने के योग्य केवल महाराज या प्रधानमंत्री हैं। मुझे आगे जाने दोगे या नहीं,'' कहते हुए उसने म्यान से तलवार निकाली।

पहरेदार स्तब्ध रह गये। उन्होंने एक पहरेदार को यह खबर सुनाने प्रधान मंत्री के पास भेजा। मंत्री ने उस युवक को अपने पास बुलाया।

निर्भय होकर मंत्री को देखते हुए उस युवक ने पूछा, ''क्या आप ही प्रधान मंत्री हैं?''

''हाँ, हाँ, मैं ही प्रधान मंत्री हूँ। तुम्हारा क्या नाम है? किस काम पर आये?'' मंत्री ने पूछा।

युवक ने सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम किया और कहा, ''महामंत्री जी, मेरा नाम नरसिंह वर्मा है।

धर्माधिकारी

मालूम हुआ है कि महाराज ऐसे पराक्रमी और साहसी युवकों को अपनी सेना में भर्ती कर रहे हैं, जो हमारे राज्य पर हमला करनेवाले हूणों का सामना कर सकें और उनके छक्के छुडा सकें। इसी काम पर यहाँ आया हूँ।''

''इसका यह मतलब हुआ कि योद्धा बनकर हूणों से युद्ध करने का इरादा लेकर आये हो। परंतु तुम्हारी मूंछ को देखते हुए कोई भी दुश्मन तुम पर बार करने से हिचकेगा, संकोच करेगा।'' मंद मुस्कान भरते हुए प्रधान मंत्री ने कहा।

''महामंत्रीजी, मेरी मूंछ ऐसी क्यों है, इसके पीछे लंबी कहानी है,'' नरसिंहवर्मा ने कहा। मंत्री ने कहा, ''वह कहानी ज़रा संक्षेप में बताना।''

नरसिंहवर्मा ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा ''मैं देशभक्त हूँ। मेरी नस-नस में देशभक्ति कूटकूटकर भरी हुई है। मैंने जान की बाजी लगायी और हूणों के सरदार के शिबिर में घुस गया।

वह बाघ के चर्म के आसन पर भलूक चर्म ओढ़कर बैठा हुआ था। उसके चारों ओर बाज और तलवार लिये सैनिक खड़े थे। वे मुझसे पूछें कि तुम कौन हो, उसके पहले ही मैंने हूणों के सरदार से कहा, ''जो भी तुम्हें देखेगा, उसे शंका होगी कि तुम कुत्ते हो या सियार हो। हमारे राज्य पर हमला करने का तुम्हारा इतना साहस ! तुम्हें...'' मैं अपनी बात पूरी करूँ, इसके पहले ही उसने सैनिकों को मुझे मार डालने की आज्ञा दी। एक सैनिक ने फ़ौरन मेरे गले को अपना निशाना बनाते हुए तलवार फेंकी। निशाना चूक गया और मेरे दायीं ओर की मूँछ उस तलवार से आधी कट गयी। दूसरे ही क्षण तेज़ी से मैं वहाँ से भाग निकला। मुझे पकड़ने की उनकी कोशिश नाकाम हुई।''

''वाह, वाह, यह सब कुछ कब हुआ?'' मंत्री ने पूछा। ''यह बहुत पहले की घटना नहीं, पंद्रह मिनटों के पहले ही घटी है।'' नरसिंहवर्मा ने बिना सकपकाये कह डाला।

प्रधानमंत्री ठठाकर हँसा और बोला, ''अब राजा को चाहिये, एक विदूषक, आस्थान विदूषक। मेरे साथ आओ और राजा से मिलो।'' यों कहते हुए प्रधान मंत्री उसे अपने साथ ले गये।

धैर्ये साहसे लक्ष्मी!

रात को भोजन कर चुकने के बाद सब बच्चे सावित्री दादी के इर्द-गिर्द बैठ गये और कहानी सुनाने की जिद करने लगे। दादी कहानी सुनाना शुरू करने ही वाली थी कि नागबाबू ने सूर्य की ओर इशारा करते हुए कहा, ''दादी, बीच में ही यह स्कूल छोड़कर भाग आया। जानती हैं, इसने ऐसा क्यों किया? सुंदर ने अध्यापक से शिकायत की कि किसी ने उसकी नयी क़लम की चोरी की। उन्होंने आदेश दिया कि सब लड़कों की थैलियाँ ढूँढ़ी जाएँ। इसने अपनी थैली में हाथ डाला तो पाया कि कलम जैसी कोई चीज़ उस थैली में है। बस, डर के मारे कांपता हुआ वह बाहर भाग गया। पर असल में इस क़लम की चोरी की गोपी ने। उसी ने यह क़लम इसकी थैली में डाली।''

दादी ने सूर्य की ओर देखते हुए कहा, ''बेटे सूर्य, तुमने उस क़लम की चोरी नहीं की। फिर भी क्यों भाग गये?''

सूर्य ने कहा, ''दादी, मुझे इस बात का डर था कि सब मुझे चोर ठहरायेंगे।''

''बुद्धिमानों ने कहा है, 'धैर्ये साहसे लक्ष्मी।' इसी के बारे में कहने जा रही हूँ। ध्यान से सुनना,'' यों कहते हुए दादी ने कहानी सुनाना शुरू कर दिया:

बहुत पहले की बात है। श्रीधर और विमल नामक दो मित्र गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। वे दोनों अक़्लमंद ही नहीं थे, बल्कि विनयशील भी थे। इसलिए गुरु उन दोनों को बहुत चाहते थे। विद्याभ्यास की समाप्ति के बाद जब वे दोनों गुरुकुल छोड़कर जाने लगे तब गुरु ने उनसे कहा, ''पुत्रो, बहुत पहले एक बहुत बड़े महाराज को कष्टों का सामना करना पड़ा। उनका सब कुछ उनसे छिन गया। दीर्घकाल से जो अष्टलक्ष्मियाँ उनके साथ थीं, उनका साथ देती आ रही थीं, एक-एक करके उन्हें छोड़कर जाने लगीं।

''धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी....यों सातों देवियाँ महाराज को छोड़कर चलती बनीं। परंतु उन्हें इसका दुख नहीं हुआ। वे इससे चिंतित और भयभीत नहीं हुए। पर, अंत में जब धैर्यलक्ष्मी उन्हें छोड़कर जाने लगी तब उन्होंने उससे कहा, 'माँ, शेष लक्ष्मियाँ मुझे छोड़कर चली गयीं, इसकी मुझे चिंता नहीं है। किन्तु, तुम्हारे बिना मेरा जीवन व्यर्थ है। तुम साथ दोगी तो वही मेरे लिए सब कुछ है। मुझे विश्वास है कि तुम साथ दो तो मैं वह सब कुछ प्राप्त कर लूँगा, जो मुझसे छिन गया।'

''राजा की बातों से धैर्यलक्ष्मी का हृदय करुणा से भर गया। उसने राजा को आश्वासन देते हुए कहा, 'पुत्र, सदा मैं तुम्हारे ही साथ रहूँगी।' धैर्यलक्ष्मी का सहारा पाकर कुछ ही समय में उन्होंने अपना पूर्व वैभव पा लिया। इसीलिए बड़े लोग कहते रहते हैं, 'धैर्ये साहसे लक्ष्मी'। मनुष्य को विपत्ति से धैर्य ही बचाता है। इसलिए तुम लोग भी किसी भी परिस्थिति में धैर्य मत खोना। किसी दिन तुम भी महान बनोगे।'' यों गुरु ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा।

दोनों शिष्य श्रीधर और विमल गुरु का आशीर्वाद लेकर गुरुकुल से राजधानी के लिए निकल पड़े। राजधानी की सरहदों पर पहुँचते पहुँचते अंधेरा छाने लगा। थोड़ी दूर और आगे गये तो उन्हें एक सराय दिखायी पड़ी। दोनों सराय में गये तो उसके मालिक ने उनका प्रेमपूर्वक स्वागत किया। उनसे एक-एक अशर्फ़ी लेकर उनके भोजन व कमरे का प्रबंध किया।

लगभग आधी रात को, सराय में अचानक कोलाहल मच गया। दोनों नींद से जाग उठे। श्रीधर ने पास ही खड़े एक व्यक्ति से पूछा, ''क्या हुआ? यह कैसा कोलाहल?''

''सुना कि राजा के अंतःपुर में चोरी हुई और वे चोर इसी तरफ़ आये हैं। सैनिक उन्हें ढूँढ़ते हुए यहाँ आये हैं। सबकी तलाशी हो रही है, '' उस व्यक्ति ने कहा।

''ठीक है, परंतु हमें इससे क्या लेना-देना है?'' कहते हुए श्रीधर और विमल निश्चिंत बैठ गये। थोड़ी ही देर में सैनिक उनके पास आये, उनके बारे में पूरी जानकारी पायी और उनसे अपनी-अपनी थैलियाँ दिखाने को कहा। सैनिकों ने जब उन दोनों की थैलियों को ढूँढ़ा तो श्रीधर

की थैली में उन्होंने नवरत्न खचित दो कंठहार पाये। यह देखकर दोनों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

सैनिकों ने दोनों को यह कहते हुए कसकर पकड़ लिया कि "ये रानी के हार हैं। तुम दोनों चोर हो। कहो, तुम्हारे गिरोह के और चोर कहाँ है?"

वे दोनों पसीने से तरबतर हो गये। अपने को संभालते हुए पहले श्रीधर ने कहा, "हम चोर नहीं हैं। जब मैं गहरी नींद में था, तब किसी ने इन गहनों को मेरी थैली में रख दिया होगा।"

पर सैनिकों ने श्रीधर की बातों का बिश्वास करने से इनकार कर दिया और दोनों को लाठियों से पीटने लगे। बिमल ने किसी प्रकार अपने को सैनिकों के हाथों से छुड़ाया और बड़ी ही तेज़ी से वहाँ से भाग गया। सैनिकों ने श्रीधर के हाथों में हथकड़ियाँ लगायीं और उसे राजा के सम्मुख हाज़िर किया।

राजा यशवंतसिंह बड़े ही विवेकी थे। उन्होंने, श्रीधर का पूरा विवरण शांत होकर सुना और कहा, "अगर सचमुच तुम दोनों निर्दोष हो तो तुम्हारे दोस्त को भाग जाने की क्या ज़रूरत थी?"

इस प्रश्न के उत्तर में श्रीधर ने गुरुकुल से निकलने के पहले गुरु ने जो उपदेश दिया, उसका सविस्तार विवरण दिया और कहा, "महाराज, मेरे मित्र बिमल में यह भय पैदा हो गया कि उसे अवश्य ही सज़ा होगी, इसी भय के मारे वह भाग गया। वह निर्दोष है। भगवान की क़सम खाकर मैं यह कहता हूँ। अगर आप मुझे छोड़ दें तो मैं
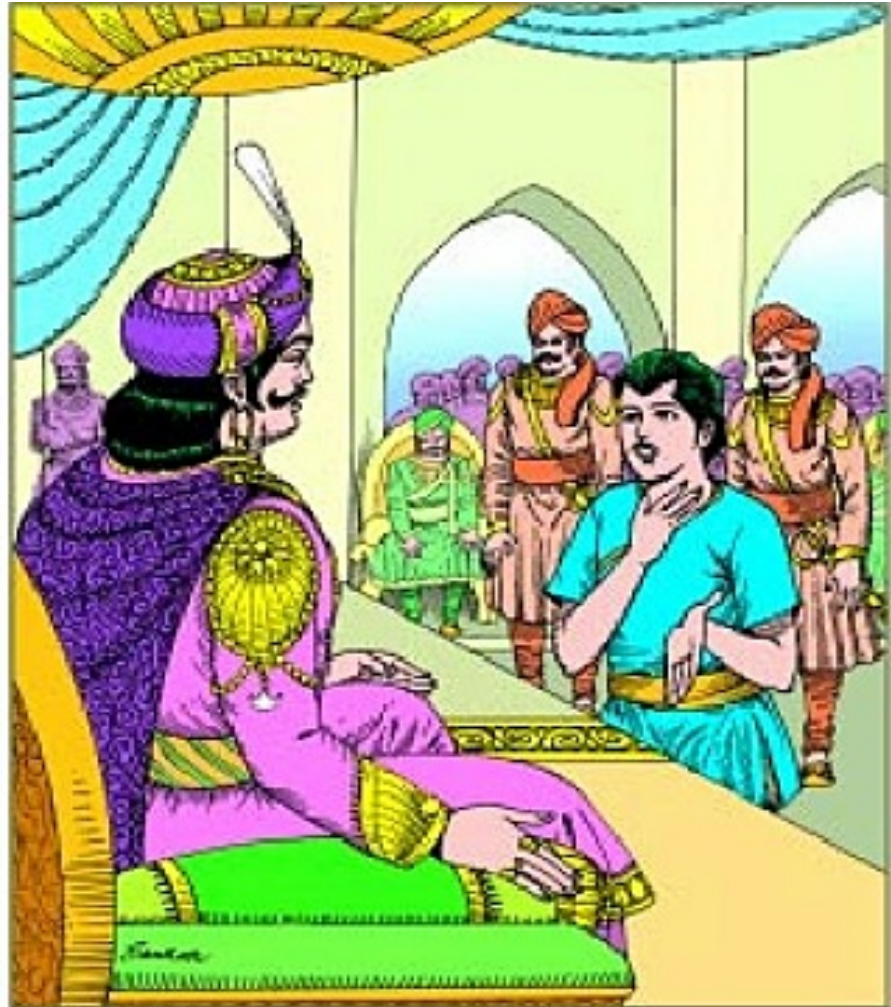
असली चोरों को पकड़कर आपके सुपुर्द करूँगा। आप चाहें तो किसी को मेरे साथ भेज दीजिये।"

राजा को, श्रीधर की बातों पर बिश्वास हो गया। उन्होंने कहा, "ठीक है, शाम तक तुम यहीं रहो। हमारा आदमी तुम्हारे साथ जायेगा।"

शाम को शेखर नामक एक व्यक्ति आया और श्रीधर को मिला। श्रीधर ने अपना संदेह व्यक्त करते हुए उससे कहा, "जिस सराय में हम ठहरे, उस सराय के मालिक पर मुझे संदेह है। मुझे लगता है कि वह चोरों को पनाह दे रहा है और उनसे अपना हिस्सा बसूल कर रहा है।" फिर उसने अपनी योजना पर प्रकाश डाला।

फिर वे दोनों व्यापार केंद्र में गये और कुछ चीज़ें खरीदीं। उन्हें लेकर दूसरे दिन सवेरे ही सराय गये और वहाँ एक कमरा किराये पर लिया। चूँकि

श्रीधर बहुरूपिये के वेष में था, इसलिए मालिक उसे पहचान नहीं पाया। दोनों ने अपनी -अपनी थैलियों से नकली आभूषण निकाले और व्यापारियों की तरह आपस में बातें करने लगे।

रात को भोजन कर चुकने के बाद श्रीधर और शेखर ने यों नाटक किया, मानों दोनों गाढ़ी निद्रा में हों। लगभग आधी रात को चंद नये लोगों के आने की आहट हुई। सराय का मालिक धीमे स्वर में उनसे बातें कर रहा था। दोनों ने जान लिया कि सराय का मालिक उन्हीं के बारे में नये लोगों को बता रहा है। फिर बाद, वे सचमुच ही सो गये और सबेरे उठकर चल पड़े।

चूँकि सराय राजधानी के सरहदों पर थी, इसलिए वहाँ से थोड़ी दूरी तक का प्रदेश सुनसान था। श्रीधर और शेखर थोड़ी दूर ही आगे गये कि तीन चोरों ने उनपर हमला कर दिया।

उन्हें मालूम था कि ऐसी घटना घटने की संभावना है, इसलिए वे भी उनका सामना करने को तैयार थे। दोनों ने अपनी मुठ्ठियों में बंद लाल मिर्च की पोटलियाँ तुरंत खोलीं और चोरों के चेहरों पर फेंकीं। दूसरे ही क्षण, वह पूरा प्रदेश चोरों के हाहाकारों से गूँज उठा। श्रीधर ने फ़ौरन अपनी थैली में से रस्सियाँ निकालीं और शेखर की सहायता से चोरों को बांध दिया। इसके बाद सराय के मालिक को भी अपने वश में कर लिया और राजा के पास ले गये। राजा ने उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दी।

फिर दादी ने हँसते हुए कहा, "बच्चो, देखा, साहसी श्रीधर ने कितनी बड़ी विजय पायी? श्रीधर के साथ शेखर नामक जो व्यक्ति आया था, वह कोई और नहीं, स्वयं युवराज ही था। इसके बाद शेखर ने अपने पिता से श्रीधर की अक्लमंदी और धैर्य की भरपूर प्रशंसा की और उसे अपना सलाहकार नियुक्त करवाया। भागे विमल को भी पकड़ लिया और राजा के दरबार में ले आये। अब कहो, इस कहानी से तुम लोगों ने क्या सीखा और हर क्षण तुम्हें क्या याद रखना चाहिये?"

सब बच्चों ने तालियाँ बजाते हुए मुक्तकंठ से कहा, "धैर्ये साहसे लक्ष्मी।"

भल्लूक मांत्रिक

17

(मायामर्कट, कालीवर्मा तथा भल्लूक मांत्रिक से बचकर मंत्र दंड सहित नगर पहुँचा। वहाँ राजभवन के सामने मदारी का रीछ, मर्कट पर टूट पड़ा। उस समय पर वहाँ आये पहरेदारों के सरदार ने मर्कट को, रीछ से बंधवाया और उसे राजा के पास ले गया। उसेक बाद-)

राजभवन की सीढ़ियों के पास पहरेदारों के सरदार ने तलवार उठायी और पीछे-पीछे चले आ रहे लोगों को रुक जाने को कहा। फिर मदारी से कहा, ''देखो, लगता है कि महाराज अभी सभा भवन में ही मौजूद हैं। तुम्हारे बिकृत रीछ को वहाँ ले जाना उचित नहीं होगा। उसकी पीठ पर जो बदमाश बंदर बैठा हुआ है उसे अपने कंधे पर डाल लो और मेरे पीछे-पीछे राजा के पास चलो। आओगे न?''

मदारी ने सरदार के रूखे स्वर से थोडा-बहुत नाराज़ होते हुए कहा, ''मुझे कोसना चाहते हों तो जी भर के कोस डालिये, पर मेरे पालतू रीछ का अपमान मत कीजिये। कितने ही राजा, सामंत, पंडित उसकी अक्लमंदी की भरपूर प्रशंसा करते रहते हैं। यह मत भूलियेगा कि सेतु बांधने में उसका एक पूर्बज भी था। इसका सबूत है, ये तालपत्र''। कहते हुए उसने पहनावे में से एक तालपत्र ग्रंथ निकाला।

पहरेदारों के सरदार ने ठठाकर हँसते हुए कहा, ''यह बंशवृक्ष राजा के आस्थान के पुरोहित को

बाद में दिखाना और पुरस्कार प्राप्त करना । पहले उस बदमाश मर्कट वेषधारी शत्रु के गुप्तचर को कंधे से नीचे उतारो।''

मदारी अनिच्छापूर्वक रीछ के पास गया और उसकी पीठ को सहलाते हुए कहा, ''मेरे बहादुर साथी, बंदर को पहले नीचे उतारना।'' फिर उसने मायामर्कट की कमर में बंधी रस्सी खींची।

रीछ चिल्लाता हुआ, मायामर्कट की कमर को पकड़कर उतारने ही वाला था कि मर्कट किकियाता हुआ नीचे कूद पड़ा और कहने लगा, ''सुनो,भल्लूक मांत्रिक से तुम्हारे राजा को भारी नुक़सान पहुँचनेवाला है। तुम्हारा राजा कहाँ हैं? मेरा मंत्रदंड कहाँ है?''

उसकी बातें सुनकर वहाँ जमा लोग तालियाँ बजाने लगे।

एक आदमी ने एक लंबी लाठी मर्कट को दिखाते हुए कहा, ''देखो, यह रहा तुम्हारा मंत्रदंड। दिखा, अपने अद्भुत काम।''

मायामर्कट ने तुरंत लाठी छीन ली और उसे ज़मीन पर सीधे खड़ा किया। फिर छलांग मारकर उसके ऊपर चढ़ गया और एक पैर पर खड़ा हो गया। कहने लगा। ''अरे मूर्खो, ऐसा अद्भुत कोई करके दिखा सकता है? तुम्हारा राजा और राज्य विपत्ति में फंसनेवाले हैं, खतरे की घंटी बजनेवाली है, फिर भी तुमलोग जादू की विद्याओं में मजा ले रहे हो। कैसे निकम्मे लोग हो तुम !''

पहरेदारों का सरदार मायामर्कट के पास आया। एक ही पैर पर खड़े मर्कट से उसने कहा, ''अरे, क्या तुम सचमुच दुश्मन के गुप्तचर नहीं हो? जिस भल्लूक मांत्रिक की बात तुम दुहराते जा रहे हो, क्या वह सच है?''

मायामर्कट बड़ी ही तेज़ी से नीचे कूद पड़ा और सरदार के हाथ से तलवार छीन ली। उससे अपनी कमर में बंधी रस्सी काट डाली और क्रोध-भरे स्वर में कहा, ''बेवकूफो, जान गये, मैं कितना शक्तिशाली हूँ? कितना सामर्थ्य है मुझमें ! अपने राजा को तुरंत यहाँ बुला लाओ ।''

पहरेदारों के सरदार के साथ-साथ वहाँ उपस्थित सब लोग भयकंपित हो गये। मायामर्कट ने इस बार तलवार घुमाते हुए सरदार के पास आकर कहा, ''अरे ओ बुद्धिहीन, तुमने मेरी आज्ञा नहीं सुनी?''

सरदार ने डर के मारे थरथर कांपते हुए कहा, ''महाराज दरबार में हैं। मैं ऐसे समय पर उन्हें

यहाँ बुलाकर लाने की जुर्रत कैसे कर सकता हूँ? मेरा सिर काट देंगे।''

''तो ठीक है। मैं खुद उनके पास चला जाऊँगा। रास्ते से हट,'' मायामर्कट ने हुक्म दिया।

पहरेदारों का सरदार चुपचाप सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ आगे गया। मर्कट भी उसके साथ-साथ गया। पर लोगों की भीड़ जहाँ खड़ी थी, वहीं खड़ी रह गयी। उनमें उनके पीछे-पीछे जाने का साहस नहीं था ।

राजा जितकेतु उस समय सिंहासन पर आसीन होकर प्रमुखों से बातें करने में मग्न था। उस समय अकस्मात् पहरेदारों का सरदार राजा के सामने आया और घबराये हुए स्वर में कहने लगा, ''महाराज, क्षमा कीजिए। मेरे पीछे हाथ में तलवार लिये मर्कट के रूप में जो चला आ रहा है, वह बड़ा ही शक्तिमान है। हमारे राज्य पर जो संकट आनेवाला है, उसके बारे में बताने और आपको सावधान करने आ रहा है।''

राजा जितकेतु और सभा में उपस्थित सब लोग मायामर्कट को देखकर चकित रह गये। फिर उसके विचित्र रूप को ध्यान से देखकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

राजा जितकेतु ने सिंहासन के बग़ल में ही खड़े दो मंत्रियों की ओर देखते हुए कहा, ''हमारे प्रधान मंत्री जीवगुप्त इस समय यहाँ नहीं हैं, अगर होते तो बहुत प्रसन्न होते।'' फिर उन्होंने पहरेदारों के सरदार से गंभीर स्वर में कहा, ''अरे कायर, एक मामूली बंदर के लिए तुमने नगरद्वार ही नहीं

खोले बल्कि स्वयं उसे सभाभवन में भी ले आये। अगर सचमुच ही शत्रु सैनिक द्वार के पास पहुँच जाते तो पता नहीं, क्या कर डालते? मैं आज्ञा देता हूँ कि तुम्हारा सिर काट दिया जाए। नगर का प्रधान चौकीदार दिरिसेन वन में मेरी आज्ञा को अमल में लायेगा।''

राजा के आदेश का स्वागत करते हुए सबने तालियाँ बजायीं। तब तक मायामर्कट राजा को और सभासदों को बिना पलक मारे ग़ौर से देख रहा था। वह ऊँचे स्वर में चिल्ला पड़ा। ''जय तांत्रिक गुरु।''

फिर जितकेतु राजा और सभासदों को संबोधित करके कहने लगा, ''आप लोग अपने को काबू में रखिये। मेरी बात ध्यान से सुनिये। मैं कोई साधारण बंदर नहीं हूँ, एक महान तांत्रिक का प्रधान शिष्य हूँ। मेरा नाम भ्रांतिमति है। अब

कालीवर्मा नामक एक महाशूर और भल्लूक मांत्रिक नामक एक मांत्रिक तुम्हारे नगर पर चढ़ाई करने आ रहे हैं। इसी की सूचना देकर आपको सचेत करने यहाँ आया हूँ।''

मायामर्कट की इन बातों को सुनकर सभा में खलबली मच गयी। राजा जितकेतु क्षण भर के लिए निश्चेष्ट रह गया और सिंहासन पर से उतरते हुए मायामर्कट से कहा, ''तुम्हारे बोलने की पद्धति से यह स्पष्ट होता है कि तुम कोई साधारण बंदर नहीं हो। अब रही, सचेत हो जाने की बात। उस दोषी कालीवर्मा और उसके अनुचरों को गिरफ्तार करके ले आने के लिए मैंने अपने प्रधानमंत्री जीवगुप्त को और कुछ सैनिकों को भी उसके साथ भेजा। वे कहाँ हैं? उनपर क्या गुज़रा?''

मायामर्कट ने हँसते हुए कहा, ''उन सब को कालीवर्मा ने अपनी तलवार से, मांत्रिक भल्लूक ने अपने मंत्र दंड से'' कहता हुआ रुक गया और भय भरी आँखों से इधर-उधर देखता हुआ कहने लगा, ''जय तांत्रिक गुरु! मेरा मंत्रदंड कहाँ है?'' फिर वह उड़ता हुआ थोडी ही दूरी पर खड़े सरदार के पास गया और उसका गला पकड़ लिया।

पहरेदारों का सरदार, मर्कट की पकड़ से अपने को छुडाने की कोशिश में लग गया और कहने लगा, ''मर्कटप्रभु, मंत्र दंड के बारे में भला मैं क्या जानूँ। महाराज, मेरी जान बचाइये।''

सभा में उपस्थित दो बलवानों ने मायामर्कट की कमर व हाथ पकड़ लिये और सरदार को उससे छुडाया। मर्कट से उन्होंने कहा, ''देखो, इस राज्य में मनुष्यों के प्राण लेने का अधिकार केवल महाराज को ही है। इस प्रकार जल्दबाजी करना न्यायसंगत नहीं है। शांत हो जाओ।''

मायामर्कट ने क्रोध से अपने दांतों को पीसते हुए कहा, ''जितकेतु राजा, जो बताना है, संक्षेप में बताता हूँ। सुनो। तुम यहाँ नगरद्वार बंद करके सिंहासन पर आसीन होकर, आराम से बैठे हो और अपना मनोरंजन कर रहे हो। इस वजह से तुम नहीं जानते कि नगर के बाहर क्या हो रहा है। तुम्हारा प्रधान चौकीदार अब रीछ के आकार में है। वह कालीवर्मा और भल्लूक मांत्रिक से मिल गया है। उनके साथ एक राक्षस भी है। वे सबके साथ तुम्हारे नगर पर धावा बोलनेवाले हैं।''

राक्षस शब्द सुनते ही राजा जितकेतु ने चौंक कर कहा, ''आज तक राक्षसों के होने की बात तो सुनी थी पर आज तक मैंने उन्हें नहीं देखा।''

उसकी बातों पर मायामर्कट ठठाकर हँस पड़ा और कहा, ''तो जल्दी ही तुम्हारी यह इच्छा भी पूरी होनेवाली है। परंतु, उस भयंकर राक्षस को देखने के बाद, तुम्हारे प्राण-पखेरू उड़ जायेंगे।''

राजा जितकेतु के दोनों मंत्री भय के मारे थर-थर कांपते हुए एक दूसरे को देखने लगे और राजा से पूछने लगे, ''महाराज, हम इस संकट से कैसे बच सकते हैं?''

''राजा होने के नाते यह प्रश्न तुम मंत्रियों से मुझे पूछना था। तुम दोनों ने साबित कर दिया कि तुम मंत्री पद के योग्य नहीं हो। इसी क्षण तुम दोनों को इस पद से हटा रहा हूँ। मेरा प्रधान मंत्री जीवगुप्त यदि यहाँ होता तो खूब सोचता और खतरे को टालने का उपाय सुझाता।'' इसके बाद राजा जितकेतु सिंहासन से हटकर मायामर्कट के पास आया। वहीं से सभी सभासदों को संबोधित करते हुए कहने लगा, ''मांत्रिकों के साथ राक्षस भी हमारे नगर पर हमला करने आ रहे हैं। आप लोग बताइये कि हम क्या करें? उनसे अपनी रक्षा कैसे करें?''

किसी ने भी कोई उपाय नहीं सुझाया। वे इसी सोच में लगे थे कि उनके नगर-प्रवेश के पहले ही कैसे भाग जाएँ, कैसे अपना धन व मूल्यवान वस्तुओं को साथ ले जाएँ आदि।

सभासदों से किसी प्रकार का उत्तर न पाने के कारण, उनकी दुस्थिति व असहायता को देखते हुए राजा जितकेतु ने मायामर्कट से कहा, ''रूप में मर्कट लगते हो, पर तुम्हारी बुद्धि मेरे प्रधान मंत्री जीवगुप्त की ही तरह तीक्ष्ण है। उस राक्षस ने शायद मेरे प्रधान मंत्री को निगल लिया होगा। इसी क्षण मैं तुम्हें अपना प्रधान मंत्री नियुक्त करता हूँ। शत्रु संहार की, राज्य संरक्षण की कोई योजना सोचो, और अमल में ले आओ।'' कहता हुआ मर्कट का हाथ पकड़कर राजा उसे सिंहासन के पास ले आया।

सभा तालियों की ध्वनियों से गूँज उठी। मायामर्कट ने तलवार मुँह में पकड़ कर रखी और दोनों हाथ ऊपर उठाये, मानों वह उन्हें अभय दे रहा हो। वह कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में तलवार मुँह से गिर गयी। मायामर्कट ने सिर झुकाये बिना ही तलवार को पूँछ के सहारे ऊपर उठाया और फिर से कुछ कहने ही जा रहा था कि इतने में सभा द्वार के पास कोलाहल मच गया। सबने उस ओर देखा।

मंत्री जीवगुप्त ने फटे कपड़ों में, बिना शिरस्त्राण के ही सभा में प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे सामंत सूर्यभूपति और दो सैनिक सभा में आये। जीवगुप्त को देखते ही कुछ सभासद चिल्ला पड़े। ''प्रधान मंत्री जीवित हैं, राक्षस ने उन्हें निगल नहीं डाला।''

मायामर्कट ने नाराज़ होकर तलवार को ऊपर उठाते हुए कहा, ''अरे, नगर के मूर्ख प्रमुखो, थोड़ी देर पहले ही राजा ने मुझे अपना प्रधान मंत्री बनाया। क्या इतनी जल्दी यह बात भूल गये?'' फिर उसने जितकेतु की ओर मुड़कर कहा, ''राजा, तुम्हें क्या कहना है? अब मैं तुम्हारा प्रधान मंत्री हूँ या यह जीवगुप्त है, जो शत्रुओं को पीठ दिखाकर भाग आया है?''

''मर्कट ही हमारे राज्य का प्रधान मंत्री है। यह मेरा अटल निश्चय है। जीवगुप्त इस क्षण से हमारे राज्य का साधारण नागरिक है।'' राजा जितकेतु ने घोषणा की।

मंत्री जीवगुप्त ने फ़ौरन म्यान से तलवार निकाली और मायामर्कट को क्रोध-भरी आँखों से देखते हुए कहा, ''यह निकम्मा, बेवकूफ बंदर, चंद्रशिला नगर का प्रधानमंत्री है? मैंने इसे एक बार राक्षस उग्रदंड की गदा के वार से बचाया। अब स्वयं इसका सिर काटने जा रहा हूँ।'' कहता हुआ वह मर्कट की ओर बढ़ा।

नाराज़ राजा जितकेतु ने कहा, ''जीवगुप्त, रुक जाओ। यह कोई साधारण बंदर नहीं है। भ्रांतिमति नाम का महा मांत्रिक है।''

''इस तांत्रिक ने भल्लूक मांत्रिक के मंत्रदंड की चोरी की। वह अब कहाँ है? उसके बिना यह एक साधारण बंदर से भी बदतर है। अपनी तलवार से अभी इसका सिर और पूँछ काट डालनेवाला हूँ।'' कहते हुए जीवगुप्त, मायामर्कट पर टूट पड़ा।

मायामर्कट ''जय तांत्रिक गुरु'' कहकर चिल्ला पड़ा और अपनी पूँछ जोर से घुमायी। फिर जीवगुप्त की तलवार को तुरंत खींच लिया और अपनी तलवार ऊपर उठायी। (और है)

धर्मदास की शक्तियाँ

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड के पास गया, पेड़ से शव को उतारा और यथावत् उसे अपने कंधे पर डालकर स्मशान की ओर बढ़ने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा, "राजन, कार्य को साधने में तुम जो आग्रह दिखा रहे हो, वह बड़ा ही प्रशंसनीय है। परंतु तुमने इस तथ्य पर कभी ग़ौर किया कि क्या तुम इसमें कभी सफल हुए? मेरी दृष्टि में तो नहीं। फिर क्योंकर इतना कठोर परिश्रम करते जा रहे हो? तुम्हें सावधान करने के लिए मैं धर्मदास की कहानी सुनाने जा रहा हूँ, जो शक्ति संपन्न होते हुए भी अपने भाई को अपने समान शक्तिशाली बना नहीं सका, माँ की इच्छा भी पूरी कर नहीं पाया। मुझे इस बात का
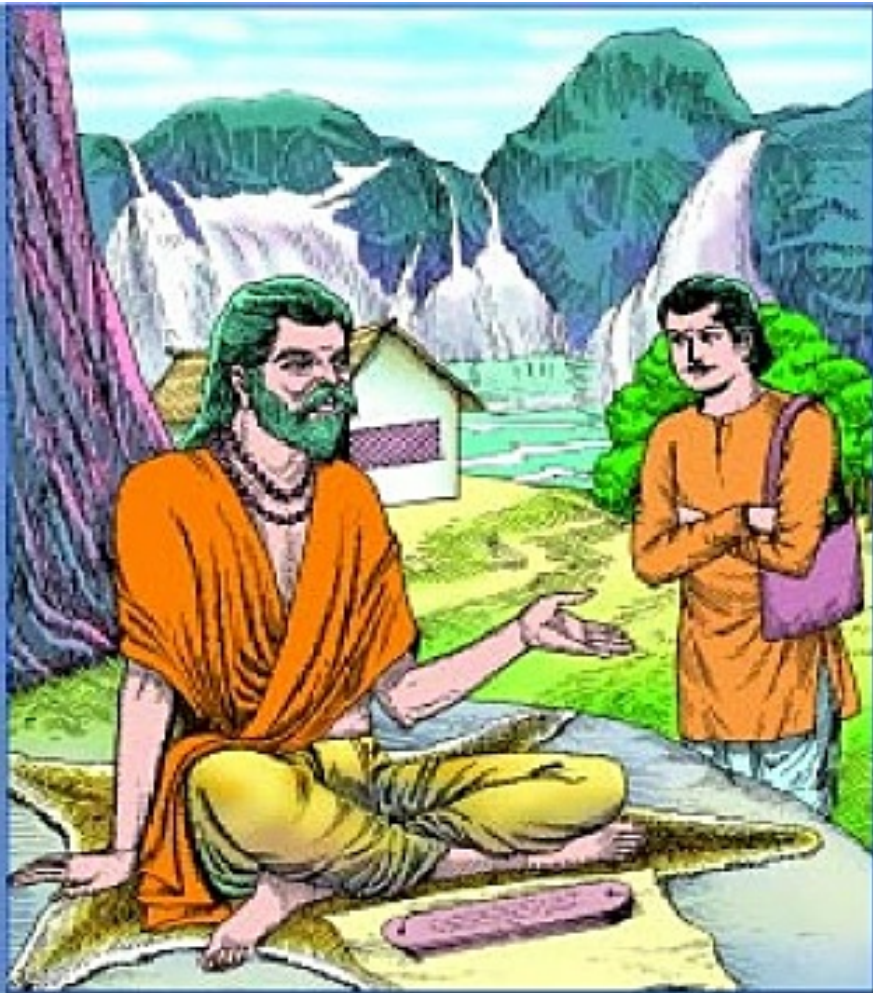
डर है कि तुम भी उसकी तरह कहीं विफल न हो जाओ। थकावट दूर करते हुए धर्मदास की कहानी सुनो।'' फिर बेताल यों सुनाने लगाः

वीरदास शैलवर गाँव का निवासी था। वह चार एकड़ जमीन का मालिक था। उसके तीन बेटे थे। दूसरा बेटा रामदास और तीसरा बेटा कृष्णदास नादान थे। बड़ा बेटा धर्मदास खेती करना नहीं चाहता था। उसने पिता से कह दिया कि मैं गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करना चाहता हूँ। पर वीरदास ने अपने बेटे की इच्छा को मानने से इनकार कर दिया। धर्मदास घर छोड़कर चला गया। वीरदास ने उसका पता लगाने की कोशिश की पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

कुछ सालों के बाद वीरदास सख्त बीमार पड़ गया और उसकी वाक् शक्ति जाती रही। बड़े-बड़े वैद्यों ने जांच करने के बाद कह दिया कि इस रोग की कोई दवा है ही नहीं। इसके बाद रामदास और कृष्णदास को उनके हाथों धोखा खाना पड़ा, जिनका उन्होंने विश्वास किया था। कर्ज बढ़ता गया और आखिर खेत और घर भी बेचने की नौबत आ गयी।

इस बीच धर्मदास, सर्वश्रेय नामक गुरु के यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त करने लगा। उन्होंने धर्मदास को कितनी ही विद्याएँ सिखायीं, कितनी शक्तियाँ प्रदान कीं। उन शक्तियों के बल पर वह अपने परिवार की दुस्थिति को जान गया। उसने गुरु से इसका जिक्र किया।

गुरु सर्वश्रेय ने उससे कहा, ''तुम्हारी शिक्षा पूरी हो गयी है। जो भी तुम्हें सिखाना था, मैंने सिखा दिया। मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि अपनी शक्तियों से दूसरों की भलाई करना। पर, माँ गुरु से भी महान होती है। मेरे आदेश का पालन तभी संभव होगा, जब तुम्हारी माँ तुम्हें इसकी अनुमति देगी। इसलिए तुरंत शैलवर जाना, अपना घर संभालना और अपनी जिम्मेदारी निभाना। माँ की अनुमति लेने के बाद ही तुम गाँव छोड़कर जा सकते हो। अपने परिवार में से किसी एक को जब तक अपनी शक्तियाँ नहीं सौंपोगे, तब तक तुम उन्हें छोड़ नहीं सकते।''

गुरु के कहे अनुसार धर्मदास शैलवर गया, पूरे परिवार को उसने धैर्य बंधाया और यों सबके दिलों में आशा भर दी। उसने खेती के बारे में रामदास को यथोचित सलाहें दीं। कृष्णदास से

अनाज की एक दुकान खुलवायी। फलस्वरूप फसल भी अच्छी हुई और अनाज के व्यापार में अच्छा लाभ भी हुआ। यह देखते हुए, गाँव के लोग कहने लगे कि धर्मदास के पास अमोघ शक्तियाँ हैं। क्रमशः धर्मदास की माँ को भी गांवों के लोगों की बातों में विश्वास होने लगा। एक दिन उसने अपने बेटे से कहा, ''बेटे, घर छोड़कर गये और शक्तिपूरित होकर लौट आये। अब अपने पिता की बीमारी का इलाज तुम्हें करना होगा। फिर से उन्हें वाक् शक्ति देनी होगी। यह तुमसे ही संभव है, क्योंकि तुम्हारे पास अचूक शक्तियाँ हैं।''

''माँ, पिताजी को अगर स्वस्थ होना हो तो इसके लिए विद्युत द्वीप के तुलसी पौधे की जड़ चाहिये। गुरु की आज्ञा है कि एक बार अगर मैं गाँव छोड़कर निकल जाता हूँ तो किसी भी हालत में गांव लौटना नहीं चाहिये। इसलिए भाई कृष्णदास को अपने साथ ले जाऊँगा। मार्ग मध्य में उसे अपने समान शक्तिवान बनाऊँगा। उसके द्वारा तुलसी पौधे की जड़ भेजूँगा। तुम्हारी अनुमति हो तो निकलता हूँ।'' धर्मदास ने कहा।

तब उसकी माँ ने कहा, ''ठीक है, विद्युत द्वीप जाने के लिए निकलो। गुरु की कोई भी आज्ञा माँ के प्रेम से महान नहीं है, उसे जीत नहीं सकती।''

धर्मदास, कृष्णदास को अपने साथ लेकर निकल पड़ा। गांव के बाहर आते ही कृष्णदास ने अपने बड़े भाई से कहा, ''भैय्या, तुममें अद्भुत शक्तियाँ भरी पड़ी हैं। ऐसा कुछ करना, जिससे वे शक्तियाँ मुझे भी प्राप्त हों।''

''विद्युत द्वीप पहुँचते -पहुँचते अगर तुम्हें विश्वास हो जाए कि मुझमें अद्भुत शक्तियाँ हैं, तो तुम उन्हें पा सकते हो।''

इतने में एक बैलगाडी वहाँ आयी। गाडीवाले जनक ने गाड़ी रोकी। धर्मदास ने अपने भाई से कहा, ''विद्युत द्वीप पहुँचने तक तुम्हें गाड़ी में यात्रा करनी नहीं चाहिये। तुम पैदल चलकर आना।'' कहता हुआ वह गाड़ी में बैठ गया।

कृष्णदास आधे दिन तक चलता रहा। अपने भाई को देखकर रुक गया, जो एक पेड के नीचे बैठा हुआ था। वह बहुत ही थक गया था। उसे भूख लग रही थी। इतने में शैलवर लौट रहा बापट वहाँ आया और कहने लगा ''मैं बहुत भूखा हूँ।

पर किसी के साथ मिलकर खाने की मेरी आदत है और मेरा नियम भी।'' कहते हुए उसने गठरी खोली जिसमें स्वादिष्ट आहार-पदार्थ थे।

धर्मदास ने तुरंत कहा, ''भाई को एक महान और पुण्य कार्य पर अपने साथ ले जा रहा हूँ। जब तक वह कार्य पूरा नहीं होता तब तक उसे उपवास रखना होगा।'' यों कहकर उसने बापट के साथ खाना खा लिया।

थोडी देर बाद जब बापट चला गया तब धर्मदास ने कृष्णदास से कहा, ''अंधेरा छाने जा रहा है। भरपेट खाने के कारण मुझे नींद आ रही है। नियम के अनुसार तुम्हें सोना नहीं चाहिये। तुम जागे रहो और अच्छी तरह से रखवाली करना। इसमें दोनों की भलाई है।'' कहते हुए वह निद्रा की गोद में चला गया।

कृष्णदास रात भर जागा रहा और प्रातःकाल दोनों भाई फिर से निकल पड़े। वे एक नदी तट के पास पहुँचे। नदी में नाव तो थी, पर मल्लाह नहीं था। नदी के बीच में अचानक एक टीले पर बिजली कौंधी।

उस टीले को दिखाते हुए धर्मदास ने कृष्णदास से बताया, ''वही विद्युत द्वीप है। हर दिन वह चमकता रहता है, इसीलिए उसका नाम विद्युत द्वीप पड़ा। इतने में मल्लाह वहाँ आया। और कहने लगा,'' मैं विद्युत द्वीप जा रहा हूँ। चाहो तो तुम दोनों भी आ सकते हो।''

धर्मदास ने भाई से कहा, ''पिता के नाम का स्मरण करते हुए नदी में कूद पड़ो। तैरते हुए वहाँ पहुँच जाना। वहाँ मैं तुम्हारा इंतजार करूँगा।''

कुछ और सोचे बिना बड़े भाई के कहे मुताबिक कृष्णदास नदी में कूद पड़ा। वह बिल्कुल थक गया। वह कुछ बोल भी नहीं पा रहा था। तब तक धर्मदास वहाँ पहुँच चुका था।

जब कृष्णदास थोड़ा-बहुत ठीक हो गया, दोनों तुलसी पौधे की जड की खोज में निकल पड़े। एक जगह पर, उन्होंने अपने ही गांव के गोपी को देखा, जो किसी पौधे के लिए कुदाल से ज़मीन खोद रहा था। वहाँ उनके आने की वजह जानकर उसने कुदाल उन्हें देनी चाही।

कृष्णदास उससे कुदाल लेने ही जा रहा था तब धर्मदास ने उसे रोकते हुए कहा, ''तुलसी के पौधे की जड़ हाथों से ही उखाड़नी चाहिये। यह नियम है और उसका उल्लंघन मत करना।''

थोड़ी देर और आगे जाने के बाद उन्हें तुलसी के बड़े-बड़े पौधे दिखायी पड़े। हाथों में दर्द हो रहा था, फिर भी कृष्णदास ने अपने ही हाथों से जड़ उखाड़ी।

बड़े भाई ने छोटे भाई की प्रशंसा करते हुए कहा, ''तुम्हारी पितृ भक्ति प्रशंसा योग्य है। मुझमें अगर शक्तियाँ हों तो अब से उनमें से आधी शक्तियाँ तुम्हारी हो गयीं। अब तुम हवा में उड़कर घर पहुँच सकते हो।''

परंतु, ऐसा नहीं हुआ। कृष्णदास ने उड़ने की बहुत कोशिश की, पर उड़ नहीं पाया। धर्मदास ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''लगता है कि तुम्हें मेरी शक्तियों पर विश्वास नहीं है। कर भी क्या सकते हैं? पिताजी को स्वस्थ करने के लिए तुमने तुलसी की जड़ पा ली, यही गर्व की बात है। घर लौटो और इस जड़ के बल पर पिताजी को फिर से बोलने की शक्ति प्रदान करो। मैं गुरु की आज्ञा का पालन करने जा रहा हूँ।''

नदी तट पर पहुँच चुकने के बाद दोनों भाई अलग-अलग रास्तों पर चले गये। उत्साह भरा कृष्णदास घर पहुँचा। तुलसी की जड़ का सेवन करते ही उसका पिता बोलने लगा।

कृष्णदास ने सोचा कि तुलसी की जड को पाने के लिए उसने जो-जो कष्ट उठाये, जो-जो मुसीबतें झेलीं, अगर इसका ब्योरा जनक, बापट और गोपी खुद देंगे तो अच्छा होगा। उसने दूसरे दिन उन तीनों को बुलवाया। जनक ने पहले वीरदास से कहा, ''तुम्हारा बड़ा बेटा धर्मदास कोई साधारण मनुष्य नहीं है। मैंने अपनी आँखों से देखा कि वह हवा में उड़ रहा है। और हमारे पहुँचने के पहले ही पहुँच चुका है।''

कृष्णदास यह सुनकर हक्का-बक्का रह गया। बापट ने आकर कहा, ''गाँव लौटते हुए पेड़ के नीचे बैठे धर्मदास को देखा। गठरी खोलता हूँ तो देखता हूँ कि उसमें स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ हैं।

इतने में गोपी भी कहने लगा,'' भाई कृष्णदास की नाव के पीछे-पीछे पानी पर चलते हुए धर्मदास चले आ रहे थे। मैंने यह दृश्य अपनी आँखों देखा।''

यह सब सुनते हुए कृष्णदास का सिर चकरा गया। बडे भाई ने उसकी इतनी भलाई की, पर उसकी समझ में नहीं आया कि उसे वह क्यों पहचान नहीं पाया। उसे लगा कि यह सब हुआ,

उसके स्वार्थ व अहंकार के कारण ही। उसमें पश्चाताप की भावना घर करने लगी। इसके दूसरे ही क्षण उसमें कुछ नवीन शक्तियाँ प्रवेश करने लगीं।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से पूछा, ''राजन्, कृष्णदास अपने बड़े भाई की अपूर्व शक्तियों को प्रारंभ में पहचान नहीं पाया, इसका कारण उसमें भरा स्वार्थ और अहंकार ही है या कोई और कारण है? विद्युत द्वीप जाने के पहले उसकी माँ ने उससे कहा था कि वहाँ से लौटने के बाद यहीं मिल-जुलकर रहेंगे और यह भी कहा था कि किसी भी गुरु की आज्ञा माँ के प्यार को जीत नहीं सकती। परंतु धर्मदास घर नहीं लौटा। क्या यह माँ के आदेश का अतिक्रमण नहीं है? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''धर्मदास ने, अपने छोटे भाई कृष्णदास को अपनी शक्तियाँ सौंपनी चाहीं। पर कृष्णदास को अपने बड़े भाई की शक्तियों में विश्वास नहीं था। तुलसी के पौधे की जड़ को ले आने के लिए जिस क्षण धर्मदास ने कृष्णदास को चुना, उसी क्षण से उसमें अहंकार भर गया। और वह समझने लगा कि मैं महान हूँ। इसी वजह से वह बड़े भाई की शक्तियों को पहचान नहीं पाया।

कोई भी शक्तिमान अपनी शक्तियाँ अयोग्य को चाहे भी तो सौंप नहीं सकता। अब रही माँ की बात। कोई भी माँ यह नहीं चाहती कि उसका बेटा कर छोड़कर जाए, कहीं और रहे। यही तो मातृप्रेम है।

किन्तु धर्मदास लोक क्षेम के लिए घर छोड़कर चला गया। वह भी, अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के बाद। यद्यपि धर्मदास ने माँ की इच्छी पूरी नहीं की, फिर भी यह उसका अपराध माना नहीं जा सकता, क्योंकि उसका लक्ष्य महान था।

राजा का मौन-भंग करने में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा। ***आधार ''वसुंधरा'' की रचना।***

जब गुलाम शासक बने

देशों तथा साम्राज्यों के शासक प्रायः सम्राट, खलीफा, सुलतान तथा नवाब के रूप में जाने जाते हैं। तब क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत पर एक बार ''गुलाम बंश'' ने राज्य किया? यह कैसे सम्भव हो सका? सन् ११९२ में अफगानिस्तान के मुहम्मद गोरी ने पंजाब पर आक्रमण किया। लेकिन वह अफगानिस्तान से दूर नहीं रहना चाहता था। उसने अपने विश्वास-पात्र गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक को दिल्ली में, जो उस समय पंजाब का हिस्सा था, अपना बायसराय नियुक्त किया। ऐबक तथा उसके उत्तराधिकारियों ने लगभग तीन सौ वर्षों तक राज्य किया। ये गुलाम बंश के नाम से प्रसिद्ध हुए। ऐबक ने ही अपनी विजय के स्मारक के रूप में दिल्ली में ७८ मीटर ऊँची कुतुब मीनार का निर्माण किया।

मनके जो लायें कीर्ति और कंचन

सन्तों और मुनियों ने ही सर्वप्रथम भूरे रंग के मनकों यानी रुद्राक्ष के दानों के आध्यात्मिक तथा औषधीय महत्व को पहचाना। धातु के तार में गूंथे हुए दानों को जपमाला के रूप में या गले में पहनने के लिए उपयोग में लाया जाता है। मनकों पर बनी रेखाओं (मुखी) के आधार पर इनका वर्गीकरण किया जाता है। पंचमुखी रुद्राक्ष आम होते हैं; २१ मुखी रुद्राक्ष दुर्लभ होते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष से विश्वास के अनुसार कीर्ति और कंचन की प्राप्ति होती है। चार मुखीसे विद्या प्राप्त होती है। तीनमुखी से अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।

प्रकृति के प्रेम का रहस्य

अन्य देशों (मलयेशिया) की जनश्रुत कथाएँ

एक किशोरवय बालक, बेचारे अंकस के पास खाने के लिए कुछ भी न था। वह दोपहर में जंगल की ओर इस उम्मीद से निकल पड़ा कि शायद भूख मिटाने के लिए कुछ फल मिल जाये। शीघ्र ही उसे एक मात्र वृक्ष पर मात्र एक फल दिखाई पड़ा जो न सिर्फ खाने योग्य था बरन बहुत स्वादिष्ट भी था। वह खुशी से उछल पड़ा। लेकिन हाय! वह तो वृक्ष की ऊपरी शाखा पर लटक रहा है और वृक्ष इतना पतला है कि चढ़ पाना सम्भव नहीं है। वह फिर दुखी हो गया।

तभी उसे एक वाणी सुनाई पड़ी, ''वृक्ष के नीचे थोड़ी सी खुदाई करो तो जरूरत से अधिक धन मिल जायेगा।'' सचमुच ! ऐसा ही हुआ। वृक्ष के नीचे खोदते ही उसे सोने का एक ढेला मिला। उसने महसूस किया कि यहाँ अभी और सोना है, लेकिन वह सब एक ही बार में निकालना नहीं चाहता था। तुरन्त वह सोना लेकर बाजार चला गया और उसे अशर्फियों में बदल लिया। फिर एक बैलगाड़ी खरीद कर और उसे भोजन तथा अन्य जरूरी चीजों से लाद कर अपनी झोंपड़ी में लौटा।

दूसरे दिन उसने कुछ राजमजदूरों को बुला कर जंगल के निकट अपने लिए एक भवन निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया।वास्तव में वह भवन बन कर तैयार होने पर महल जैसा लगने लगा। वह गुप्त रूप से वहाँ जाकर, जहाँ उसे पहले सोना मिला था, और सोना लाने लगा। जब उसके पास एक महल और अनेक नौकर-चाकर हो गये तब वह चाहने लगा कि दूसरे भी उसके इर्द गिर्द रहें। उसने अपने महल के चारों ओर बसने में बहुतों की सहायता की।

अंकस ने विवाह कर लिया और कुछ वर्षों में ही एक सलोने बेटे और प्यारी गुड़िया सी एक बेटी का पिता भी बन गया। सुख शान्ति से दिन बीत रहे थे। लेकिन पास के राजा को यह डर हो गया कि अंकस कहीं अपने को एक दिन राजा न घोषित कर दे। इसलिए वह चाहता था कि अंकस का कोई वारिस न हो, जिससे उसके मरने पर उसकी सारी जायदाद वह हथिया ले। इसलिए उसने उसके पास

अपने दो बदमाश दरबारियों को भेजा। ये दरबारी अभिनय करने में बड़े दक्ष थे। राजा के गुप्तचरों की सहायता से उन्होंने अंकस का प्रिय घोड़ा चुरा लिया और उसे घने जंगल के अन्दर एक पेड़ से बाँध दिया। जब अंकस घोड़े की खोज करने में परेशान था, तब वे ज्योतिषी बन कर उसके पास आये और कुछ गणना के बाद सचमुच घोड़े का पता लगा दिया।

अंकस ने उनसे अपने बच्चों, बेटे कर्मा तथा बेटी पुष्पनील, के भविष्य के बारे में जानना चाहा। ढोंगी ज्योतिषियों ने अंकस को विश्वास में लेकर कहा कि, "तुम्हारे बच्चे तुम्हारी, तुम्हारी पत्नी तथा तुम्हारे आस-पास रहनेवालों की मृत्यु के कारण बनेंगे। उन्हें जंगल में छोड़ देना ही अच्छा होगा।" अंकस उदास हो गया। लेकिन उसने ज्योतिषियों की सलाह मान ली। रात्रि में बच्चों को दवा की एक खुराक खिला कर बेहोश कर दिया गया। फिर उन्हें घोड़ागाड़ी में जंगल के दूर दूसरे किनारे पर समुद्र के निकट पहुँचा कर एक पत्थर की पटिया पर छोड़ दिया गया।

सूर्य की किरणों का स्पर्श पाकर कर्मा और पुष्पनील जग पड़े। लेकिन रोने-धोने या जंगल में भटकने से भयभीत होने की अपेक्षा वे सूर्योदय की भव्यता और समुद्र की लुढ़कती स्वर्णिम लहरों को देख कर मुग्ध होने लगे। "हमारे माता-पिता ने हमें प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द देने के लिए ऐसा निश्चय किया होगा।" कर्मा ने कहा। "तुम ठीक कहते हो। पुष्पों के उस गुच्छे को देखो। क्या उससे भी अधिक दिव्य सौन्दर्य कभी देखा है?" पुष्पनील ने पूछा। "नहीं, लेकिन देखो, ऐसे और भी वहाँ पर उतने ही प्रभावशाली सौन्दर्य बिखरे पड़े हैं।" कर्मा ने अन्य अनेक पुष्पों से लदे वृक्षों व झाड़ियों की

ओर संकेत करते हुए बहन का ध्यान आकर्षित किया।

वे जंगल के स्वादिष्ट फल खाते, झरनों का पानी पीते और आनन्द से उछलते-कूदते हुए अपना समय बिताने लगे। धीरे-धीरे जंगल में अन्धकार फैलने लगा। "हमारे पिता के आदमियों को शायद याद नहीं होगा कि उन्होंने हमें कहाँ छोड़ा है।" पुष्पनील ने टिप्पणी की।

अचानक उन्हें अपने सामने चाँदनी से जगमगाता एक महल दिखाई पड़ा। "कैसा आश्चर्य है! अब तक हमने इसे देखा नहीं", उन्होंने कहा। जैसे ही वे उस जादू-घर के निकट गये, एक स्नेह सिक्त वाणी ने उन्हें अन्दर आने के लिए आमंत्रित किया। वहाँ उनके लिए खाना और बिस्तर तैयार थे। "लेकिन हमारा मेजबान कौन है?" दोनों चकित थे। "मैं प्रकृति की आत्मा हूँ। तुमने मेरे वृक्षों को,

नहीं डरे। उन्होंने अनुभव किया कि प्रकृति का रहस्यमय प्रेम उनके अन्दर क्रियाशील है। वे समुद्र तट पर घूमने लगे। एक जलपोत लंगर डाले खड़ा था तथा उसका कप्तान अपने कर्मियों के साथ उनकी ओर बढ़ा चला आ रहा था।

''हम अपने माता-पिता के पास जाना चाहते हैं। क्या आप हमारी मदद कर सकते हैं?'' कर्मा ने उनसे पूछा। फिर उसने कप्तान को अपने

समुद्र को प्यार किया, मेरे वातावरण को स्नेह दिया। इससे हमें आनन्द मिलता है। अब बताओ, तुम्हें बरदान में क्या चाहिये? ढेर सारा स्वर्ण या प्रकृति का रहस्यमय प्रेम?'' अदृश्य आत्मा ने पूछा।

''प्रकृति का रहस्यमय प्रेम!'' भाई-बहन ने एक साथ कहा। ''श्रेष्ठ! प्रकृति हमेशा तुम्हारे साथ मित्रवत व्यवहार करेगी'', अदृश्य आत्मा ने कहा।

''धन्यवाद'', बालक और बालिका ने उत्तर दिया। फिर वे भोजन करके सो गये। जब वे प्रातःकाल उठे तब उन्हें महल दिखाई नहीं पड़ा। बल्कि कुछ डरावने डाकुओं ने उन्हें घेरते हुए कहा, ''चलो हमारे साथ, तुम हमारे गुलाम हो।''

''हम तुम्हारी बात नहीं मानते,'' कर्मा ने दृढ़तापूर्वक कहा।

''ए, नहीं मानते? गुस्ताख!'' बदमाशों के सरदार ने अपने तेज चमचमाते चाकू दिखाते हुए कहा।

लेकिन दूसरे ही क्षण वह पीला पड़ गया। एक भयंकर गर्जन से जंगल काँप गया। अन्य डाकू तो भाग गये लेकिन उनके सरदार को एक शेर घसीटता हुआ ले गया। फिर सब कुछ शान्त हो गया। आश्चर्य की बात यह थी कि कर्मा और पुष्पनील बिलकुल

गाँव के बारे में बताते हुए कहा कि कैसे एक दिन प्रातःकाल अचानक उन्होंने अपने आप को बहन के साथ जंगल में पाया।

''हम्म्...!'' कप्तान ने कहा। ''यदि मेरे पोत पर चढ़ जाओ तो मैं तुम्हें तुम्हारे गाँव में पहुँचा दूँगा।''

प्रसन्नचित्त होकर कर्मा और पुष्पनील पोत पर बैठ गये। लेकिन जब पोत यात्रा पर चल पड़ा तब कप्तान ने ठठा कर हँसते हुए कहा, ''लड़की मेरी बीवी और लड़का मेरा नौकर बनेगा। हा हा हा...!''

''बीवी ! मैं तुम जैसे बदमाश की?'' पुष्पनील चिल्लाई। पुष्पनील के ऐसे कहते ही कप्तान ने उसे गुस्से में उठा कर लहराते सागर में फेंक दिया। ''ओ मेरी बहन, मेरी जिन्दगी!'' कर्मा का हृदय फूट पड़ा। उसकी आँखों के सामने ही एक शार्क मछली ने देखते-देखते उसकी बहन को निगल लिया।

''अब मेरा गुलाम बनो या मौत के लिए तैयार हो जाओ।'' कप्तान ने कर्मा को कहा। लेकिन तभी एक भयंकर तूफान ने पोत को अपनी चपेट में ले लिया। कर्मा को छोड़ कर सभी कर्मी ध्वस्त पोत के साथ सागर की कब्र में समा गये। अर्द्धचेतन अवस्था में एक लकड़ी के तख्ते के सहारे, जिसे कुछ

डॉलफिन आगे बढ़ा रहे थे, कर्मा तट पर जा लगा।

होश में आने पर वह एक बुढ़िया की झोंपड़ी में था। "बेटे, तीन दिन पहले मैं तुम्हें समुद्र तट से उठा कर लाई हूँ। मेरा दुनिया में अपना कोई नहीं है, इसलिए भगवान ने तुम्हें मेरे लिए भेज दिया है। मैं तेरी देखभाल करूँगा और तुम मेरी देखभाल करना।" बुढ़िया खुश होती हुई बोली।

कर्मा ने बुढ़िया के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। किन्तु अपनी बहन के लिए उदास था। फिर भी, उसने झोंपड़ी के चारों ओर की सूखी भूमि को हरा-भरा उद्यान बनाने में अपने आप को व्यस्त रखा। एक वर्ष बीत गया।

"बेटे, राजधानी में युवराजा का विवाह सम्पन्न हो रहा है। बरात देखने योग्य होगी। चलोगे देखने?" बुढ़िया ने बड़े प्यार से थपथपाते हुए कर्मा को कहा। दोनों उल्लास और उत्कण्ठा के वातावरण से ओतप्रोत राजधानी में पहुँच गये। अग्रदूतों ने घोषणा की कि राज्य के बाहर से आनेवाले दर्शक एक विशेष मंच पर खड़े हो जायें।

कर्मा को मंच पर लाया गया। शानदार बरात धीरे-धीरे गन्तव्य की ओर बढ़ रही थी। अचानक दुलहा-दुलहिन का रथ रुक गया।

"मेरा भाई, मेरा जीवन।" दुलहिन चिल्ला पड़ी। राजा के आदमी भीड़ को चीरते हुए कर्मा के पास गये और उसे रथ के पास ले आये। कर्मा को यह अनुभव करने में थोड़ी देर लगी कि दुलहिन और कोई नहीं बरन उसकी बहन है जिसे शार्क निगल गया था।

हाँ सचमुच! शार्क ने उसे निगल लिया था, लेकिन तट पर आकर उसने उगल दिया। प्रातः सैर करते समय राजकुमार ने उसे देख लिया और वह उसे महल में ले गया जहाँ उसकी सेवा-सुश्रूषा की गई। एक वर्ष तक वह अपने भाई की सब जगह तलाश करती रही, परन्तु व्यर्थ! राजकुमार पुष्पनील को प्यार करने लगा था। उसने इस शर्त पर पुष्पराज को अपने साथ विवाह कर लेने को राजी कर लिया कि वे भाई की खोज निरन्तर जारी रखेंगे।

विवाहोपरान्त कर्मा राजा का मुख्य सलाहकार बन गया। कुछ दिनों के पश्चात वह सेना लेकर अपने माता-पिता की खोज करने निकल पड़ा। वे दुष्ट पड़ोसी राजा के द्वारा दरिद्र बना दिये गये थे। वह उन्हें अपने नये घर में ले आया। फिर कुछ तैयारी के बाद उस दुष्ट राजा पर आक्रमण पर उसका राज्य ले लिया और स्वयं वहाँ का राजा बन गया।

"हर घटना चक्र पर प्रकृति का रहस्यमय प्रेम हमारी रक्षा करता रहा। है न?" भाई-बहन प्रायः आपस में यह कहते रहते। **एम.डी.**

समाचार झलक

आदेश पर चित्रांकन

भारत के सबसे अधिक सुप्रसिद्ध कलाकार एम.एफ. हुसैन अभी एक सौ चित्रांकन तैयार करने में व्यस्त हैं, जिसके लिए इन्हें एक सौ एक करोड़ रुपये की राशि मूल्य के रूप में दी जा चुकी है। यह आदेश इन्हें मुंबई के एक टेक्नोक्रैट स्वरूप श्रीवास्तव द्वारा दिया गया है जो आई.आई. टी.के पोस्ट ग्रैजुएट हैं और फिलहाल चीन और हांगकांग को कच्चे लोहे का निर्यात कर रहे हैं। इन चित्रकलाओं से ये अपने घर की शोभा बढ़ाने का इरादा नहीं रखते। इन्हें बेच कर मानव-सेवा-कोष के लिए ये धन एकत्र करना चाहते हैं।

ताजमहल पर संकट

ताजमहल अपने निर्माण का ३५० वर्ष पूरे कर रहा है तथा सरकार ने एक वर्ष तक चलनेवाले उत्सव का आरम्भ भी कर दिया है। आधुनिक विश्व के सात आश्चर्यों में से एक माने जानेवाले इस स्मारक पर अब संकट के बादल मंडरा रहे हैं। यमुना नदी की ओर अभिमुख पीछे की दो मीनारों के झुक जाने के चिह्न दिखाई पड़ने लगे हैं जिनका पता ५० वर्ष पहले ही लग गया था। राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रो. रामनाथ के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में यह झुकाव धीरे-धीरे बढ़ा है। उनकी मान्यता है कि यह नदी के सूखने के कारण ऐसा हुआ है। नदी के कारण ही स्मारक नींव पर संतुलित बना रहता है। यह स्मरणीय है कि निर्माण के समय चारों मीनारों को बाहर की ओर थोड़ा झुका कर रखा गया था, जिससे वे मुख्य संरचना पर न गिरें।

THE ADVENTURES OF G-man

MIND RAIDER
PART 2

माइंड रेडर
भाग 2
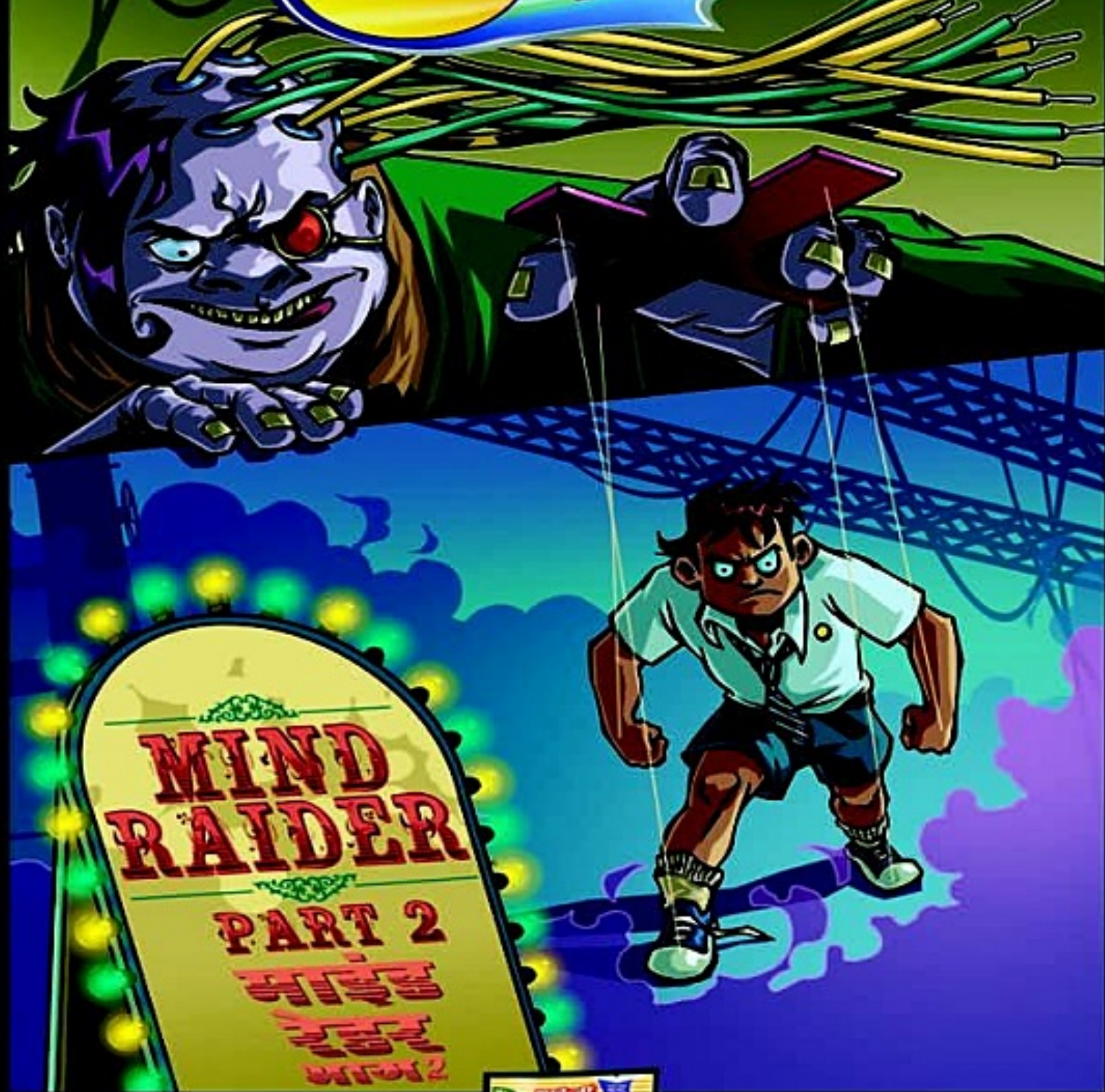
अब तक की कहानीः टैरोलीन को ज़वान बनाए रखने के लिए न्यूराल बच्चों के दिमाग़ से उनके विचारों को चुराता है। और अब वह अपने वश में किए बच्चों से जी-मैन पर हमला करवाता है। क्या जी-मैन बच्चों को छुड़ा पाएगा? या उन्हें नुक़सान पहुंचाएगा? जानने के लिए आगे पढ़िए...

न्यूराल के इन शैतानी बच्चों की फौज से निपटने का कोई तो रास्ता होगा।
सब ख़त्म हो गया। जी-मैन वहां से भाग रहा है।
अपनी नई चाल के लिए जी-मैन एकांत जगह पर चला जाता है।
मुझे कुछ सोचना होगा। सोचो! सोचो! सोचो!
अरे हां-सोच में ही छुपी है सोच।
न्यूराल से लड़ने के लिए मुझे अपने दिमाग़ में कुछ सोचना होगा।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

न्यूराल...

मैं जानता हूं कि तुम यहीं कहीं हो।

जी-मैन अपना ध्यान केंद्रित करता है और एक ऐसी स्थिति में पहुंचता है जहां सभी बिचार एक बिंदु पर आकर मिलते हैं। कुछ लोग इसे समाधि कहते हैं।

न्यूराल अब बहुत हो गया। बच्चों को जाने दो।

जी-मैन तुम हमेशा सभी को हैरत में डाल देते हो।

पर यहां न्यूराल का राज चलता है।

न्यूराल, जी-मैन के दिमाग़ में घुसकर उससे लड़ने का एक हथियार पाता है-एक गुनाह। सेना में लड़ाई के समय जी-मैन अपने सबसे जिगरी दोस्त को मरने के लिए छोड़ देता है, उसे बचाने के लिए वह कुछ नहीं करता।*
हूं... युद्ध में तुमने अपने दोस्त को धोखा दिया था।
ये झूठ है। उस वक़्त मैं लाचार था।
कायर! कायर!
कायर!
यहां असली दुनिया में।
वह कोई चाल चल रहा है। वह मुझे कमज़ोर बनाना चाहता है। मुझे जवाब देना होगा।
*नोटः जी-मैन बनने के संदर्भ में।

न्यूराल तुम कायर हो। तुम तो टैरोलीन के आगे टिक ही नहीं सकते।
यहां मैं तुमसे लड़ने आया हूं।
हां, पर इससे पीछे असली मकसद तो टैरोलीन का है। तुम तो सिर्फ़ एक कठपुतली हो।
गुलाम हो!
नहीं!
जी-मैन ठेस पहुंचाता है न्यूराल के अभिमान को- किसी भी इंसान की सबसे बड़ी कमज़ोरी।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

अमर बनने के लिए वह तुम्हारा इस्तेमाल कर रहा है।
और तुम अपने आपको इस्तेमाल होने दे रहे हो क्योंकि तुम कमज़ोर हो, डरपोक हो...
कायर हो!
झूठ है! अब मैं उसे अपने दिमाग़ से खेलने नहीं दूंगा।
जी-मैन की जीत हो रही थी और न्यूराल की हार।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

जी-मैन मौक़े का फ़ायदा उठाता है।

शर्म आनी चाहिए! वो तुम्हारा मालिक है, और तुम उसके गुलाम। तुम्हें जीने का कोई हक़ नहीं।

तुम हो बस एक... कठपुतली।

उं...हूं!

आख़िर न्यूरल टूट जाता है

नहीं!

ओह नो! मेरी मशीन

KRAASH

अ...क्या हुआ?
!?
मैं कहां हूं?
मशीन से न्यूराल का ध्यान भटका कर जी-मैन ने बच्चों के दिमाग़ को न्यूराल के चंगुल से आज़ाद कर दिया।
बहुत ही जल्द मैं तुम्हें बरबाद कर दूंगा जी-मैन।
TELEPORT
बौखलाया और डरा हुआ न्यूराल बुरी तरह चीख उठता है।
बच्चे सुरक्षित अपने मां-बाप के पास लौट आते हैं।
जी-मैन तुमने तो बहुत बड़ा ख़तरा मोल लिया था।
हां, जानता था। पर मुझसे ज़्यादा ख़तरा बच्चों को था।
G-man
के लिए पावर सप्लाय
Parle-G
Visit: www.parleproducts.com

पर अपनी असली पहचान से समझौता करना कहां तक उचित था?

मैं जानता था कि मेरे दिमाग़ में घुसकर न्यूराल मेरे अंदर छुपे तमाम राज़ जान सकता है।

माना कि न्यूराल मेरे अतीत को जान चुका है, पर अब तक उसके दिमाग़ में दुनिया भर के विचारों का कचरा भर गया होगा।

ऐसे में वह मुझको क्या शायद ख़ुद को ही याद न रख पाए।

तो अब हमें फ़ौरन उसे वहां पहुंचा देना चाहिए जहां से वह कभी वापस न आ सके।

जो हुकुम मेजर।

दस लाख करोड़ प्रकाश वर्ष दूर ब्रह्मांड के एक ग्रह ब्रेज़ेंग में...

PARLE

Cream Biscuits

CROSSWORD

CLUES

ACROSS
1. Michael Jordan's game
7. Cat's love it
8. Also called soccer
9. Andre Agassi's first love
10. Mahabaleshwar's fruit

DOWN
1. This ice cream flavour melts in your mouth
2. Have biscuits with this
3. It takes two hands to ____ the cream
4. Chocolate with sugar crumbs
5. Good on the road, great on ice
6. Aamir Khan won this race
10. Munch

Hint: All that's to do with Fun Center

Interesting Facts

The world's highest cricket ground is in Chail, Himachal Pradesh.

The flea can jump 350 times its body length. It's like a human jumping the length of a football field.

Tennis was played at the Olympics until 1924, then reinstituted in 1988.

Cranberries are sorted for ripeness by bouncing them; a fully ripened cranberry can be dribbled like a basketball.

Enhance your vocab

Words that should appear in the dictionary but don't

Aeroma: The odour emanating from an exercise room after an aerobics workout.

FunCenter: Anything yummy that gets even better when you reach the middle.

Choctasy: The joy of discovering a second layer of chocolate underneath the first.

Keyfruit: The one apple, pear or orange in the stand that, when removed, causes all others to tumble forward.

Phonesia: The affliction of dialing a phone number and forgetting whom you were calling just as they answer.

P-Spot: The area directly above the urinal in public washrooms that men stare at knowing a glance in any other direction would arouse suspicion.

O&M 6996

Bourbon

Butterscotch

Strawberry

visit us at www.parleproducts.com

*MRP inclusive of all taxes for net weight 100g.

नृत्य एक दण्ड था

हीरा लाल मुश्किल से दस वर्ष का रहा होगा जब उसकी माता और पिता दोनों गुजर गये। जब वे खेत पर काम कर रहे थे उनके ऊपर बिजली गिर पड़ी। वे एक जमीन्दार की नौकरी करते थे। जमीन्दार को छोटे बच्चे पर दया आ गई। बालक अब जमीन्दार के परिवार के साथ रहने लगा। उसने उसे भोजन के साथ सोने के लिए अपने बड़े घर में एक कोना दे दिया। जमीन्दार की पत्नी यद्यपि दयालु थी, फिर भी उससे काम अवश्य करवाती थी। उसे करने के लिए हर तरह का काम दिया जाता था और जिसे करने में उसे कोई आपत्ति नहीं होती थी, क्योंकि आखिर उसे दिन में तीन बार खाना दिया जाता था और जब जमीन्दार का परिवार आराम करता था तब वह भी विश्राम कर सकता था। इसलिए वह कभी शिकायत नहीं करता था। दो वर्ष बाद जमीन्दार ने देखा कि हीरालाल तगड़ा हो गया है और सोचा कि खेत पर वह अधिक उपयोगी हो सकता है, जहाँ हीरालाल के माता-पिता की मृत्यु के बाद उसने दो मजदूरों को बहाल किया था। उसने एक मजदूर को हटा दिया और हीरालाल को दूसरे मजदूर की मदद करने के लिए कहा।

अब हीरालाल को सुबह से शाम तक विश्राम के बिना काम करना पड़ता था। केवल दिन का भोजन, जो उसे जमीन्दार की पत्नी सुबह आते समय पैकेट में दे देती थी, खाते समय ही थोड़ा आराम मिलता था। दूसरा मजदूर आलसी था और अक्सर वह एक बड़े पेड़ के नीचे बैठकर पान
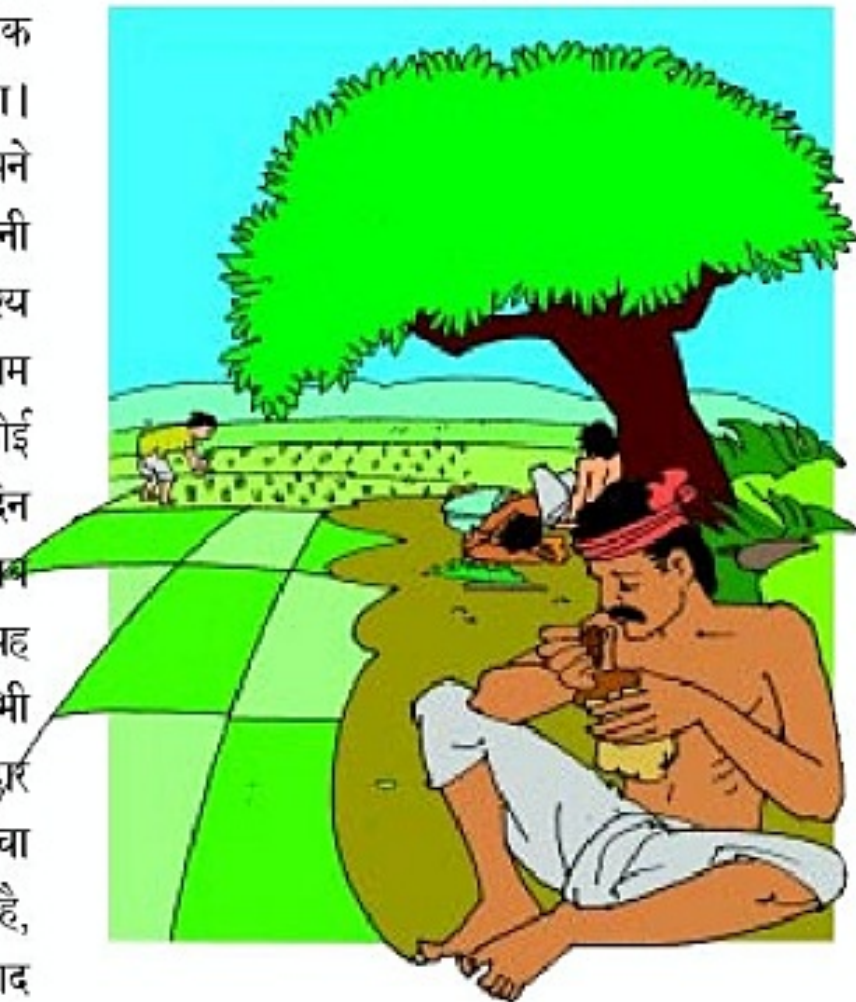
चबाया करता था। कुछ दिनों के बाद जब वह देखता कि हीरालाल काम कर रहा है तब वह लेट कर सो भी जाता था। हीरालाल ने उस मजदूर की जमीन्दार से शिकायत करना अच्छा नहीं समझा। लेकिन उसने निश्चय किया कि वह

जमीन्दार के खेत पर काम नहीं करेगा और कहीं अन्यत्र जाकर अपने ढंग से जीवन-निर्वाह करेगा।

इसलिए एक दिन सुहानी सुबह में उसने अपने कपड़ों की एक गठरी बनाई और जमीन्दार के पास पहुँचा। जमीन्दार को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि हीरालाल हर रोज की तरह खेत पर जाते वक्त जो कपड़े पहनता था, उसमें वह नहीं है। उसने उसकी पीठ पर एक गठरी भी देखी। ''क्या हुआ? किधर चले, हीरालाल?'' उसने कुछ चिन्ता के साथ पूछा। उसे चिन्ता थी कि उसकी जगह पर मजदूर कहाँ से लायेगा।

''बाबूजी, आपने पाँच सालों तक मेरी देखभाल की, उसके लिए मैं आप का कृतज्ञ हूँ। अब मुझे अपनी देखभाल स्वयं करनी चाहिये। मैं आप का उपकार कभी नहीं भूलूँगा।''

''वह तो ठीक है, लेकिन यह तो बताओ कि कहाँ जा रहे हो?'' जमीन्दार ने अपनी चिन्ता और निराशा छिपाते हुए पूछा।

''मालिक, मैं कुछ काम की तलाश में बनारस जाना चाहता हूँ। लोग कहते हैं कि बनारस बहुत बड़ी जगह है, इस गाँव से बड़ी और वहाँ नौकरी मिलना मुश्किल नहीं है।''

''लेकिन हीरालाल, क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि बनारस बहुत दूर है?'' जमीन्दार ने उसे याद दिलाते हुए कहा। ''वहाँ पहुँचने में बहुत दिन लग जायेंगे। तब तक तुम कैसे गुजारा करोगे?''

''मैंने उसके लिए सोचा है, मालिक,'' हीरालाल ने कहा। ''पिछले पाँच सालों की मजदूरी देकर आप मेरी सहायता कर सकते हैं।''

कुछ क्षणों के लिए जमीन्दार भौचक्का रह गया। इस पर बिचार करने के लिए वह समय चाहता था। ''लेकिन क्या जाने के लिए तुमने पक्का इरादा कर लिया है?''

''हाँ मालिक, मैंने पक्का इरादा कर लिया है।'' हीरालाल ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा।

''ठीक है, तब'', जमीन्दार ने कहा, ''जैसी तुम्हारी मर्जी।'' तब वह अन्दर गया और चाँदी के पाँच सिक्के लेकर बाहर लौटा।

''रख लो इन सिक्कों को, तुम्हारी सेवा के हर वर्ष के लिए एक-एक सिक्का। पर याद रखो, यदि तुम कभी वापस आना चाहो तो हमेशा आ सकते हो।'' जमीन्दार ने कहा।

हीरालाल को आश्चर्य हुआ, चाँदी के पाँच सिक्के दो वर्षों तक घर में किये गये कठिन काम और तीन वर्षों तक खेत पर की मेहनत के बदले बहुत कम थे। जो भी हो, अब वह जमीन्दार की नौकरी सदा के लिए छोड़ रहा था, इसलिए उसने उससे बहस या सौदा करना अच्छा नहीं समझा। उसने जमीन्दार को धन्यवाद दिया और हाथ जोड़ कर विदा लेते हुए जैसे ही दरवाजे से बाहर पाँव रखा कि जमीन्दार की पत्नी लंच पार्सल देती हुई बोली, ''यह रख लो, हीरालाल, कम से कम एक दिन तो भूख से बच जाओगे।''

हीरालाल ने झुककर खाने का पैकेट ले लिया और कृतज्ञता की नजरों से उसे देखा। फिर चुपचाप वहाँ से चल पड़ा। लड़का चलता रहा, चलता रहा बिना इसकी परवाह किये कि बनारस तक पहुँचने में पता नहीं उसे कितने दिन लगेंगे जहाँ उसने अपनी किस्मत आजमाने का फैसला कर लिया था।

शाम होते-होते वह काफी थक गया। उसने एक बड़े वट वृक्ष के नीचे आराम करने और सोने का स्थान ढूंढ लिया। कुछ कदम दूर पहले से एक वृद्ध व्यक्ति लेटा हुआ था और सोने की कोशिश कर रहा था। उसके बाल में जटाएं थीं जिन्हें उसने सिर के ऊपर बाँध रखी थीं। उसके कपड़े फटे पुराने थे।

लड़के को देख कर वह उठ बैठा और उससे बातचीत करने लगा। हीरालाल ने अपनी राम कहानी सुनाते हुए कहा कि बनारस में कुछ काम-धन्धा करने की बड़ी तमन्ना है। उस वृद्ध व्यक्ति के चेहरे पर एक मन्द मुस्कान फैल गई। ''बेटे, आखिर तुम आ गये। मैं अब तक तुम्हें अपनी विद्या देने का इन्तजार कर रहा था।''

देने के नाम से हीरालाल को खाने के पैकेट की याद आ गई जो जमीन्दार की दयालु पत्नी ने उसे दिया था। उसने उसका कुछ हिस्सा वृद्ध को भी दिया। खाते समय वह सोचने लगा कि किस प्रकार की विद्या उसका नया गुरु उसे देने के लिए कह रहा है।

''लम्बी यात्रा के कारण तुम काफी थक गये हो और तुम्हें विश्राम की आवश्यकता है। मैं तुम्हें विद्या कल प्रातःकाल दूँगा जब तुम ताजा रहोगे।'' यह कह कर वह लेट गया और शीघ्र ही उसे नींद आ गई। हीरालाल भी अपने स्थान पर सो गया।

दूसरे दिन प्रातःकाल वृद्ध व्यक्ति और बालक

दोनों बहुत देर तक बातचीत करते रहे। बृद्ध व्यक्ति ने अपने अनुभवों के बारे में बताते हुए कहा कि कैसे उसे दुनिया से संन्यास लेना पड़ा। "अब हमारे पास सिर्फ एक चीज़ रह गई है।" यह कहते हुए उसने अपने झोले से चन्दन की लकड़ी की एक बांसुरी निकाली और उसे हीरालाल को दिया।

लड़के ने बाँसुरी को लेते हुए कहा, "लेकिन बाबा, मैं तो बाँसुरी बजाना जानता नहीं।"

"आह! मैंने अब तक तुम्हें यह बताया नहीं।" बृद्ध व्यक्ति ने कहा। "तुम्हें सिर्फ इसमें फूँकना है और बाँसुरी से संगीत निकलेगा। जो भी संगीत सुनेगा, वह नाचने लगेगा। इसके संगीत में इतनी शक्ति है। लेकिन इसे जादू की बाँसुरी न कहो, क्योंकि यह कोई और जादू नहीं कर सकता। नाचना शुरू करने पर वह तभी नाचना बन्द करेगा, जब तुम बाँसुरी बजाना बन्द कर दोगे। तब वह संगीत से प्राप्त आनन्द के बदले कुछ तुम्हें देना चाहेगा। इस तरह बाँसुरी तुम्हारी जरूरतें पूरी कर देगी।"

हीरालाल ने उस वृद्ध व्यक्ति को साष्टांग प्रणाम किया और उसका आशीर्वाद लेकर वह पुनः अपनी यात्रा पर चल पड़ा। अचानक उसे एक पक्षी की कूजिका सुनाई पड़ी। और उसे बाँसुरी बजाने का मन हुआ। उसे नहीं मालूम था कि उसे कोई देख रहा है। अचानक उसकी नजर एक आदमी पर पड़ी जो देखने में बदमाश जैसा लग रहा था। वह उठ कर बाँसुरी की धुनपर नाचने लगा। बालक उत्साहित होकर बाँसुरी बजाता रहा और वह आदमी जो अब उतना भयानक नहीं लग रहा था, नाचता रहा। शीघ्र ही वह, ऐसा लगा जैसे नाचते - नाचते थक गया हो। हीरालाल ने बाँसुरी बजाना बन्द कर दिया। उस आदमी ने हीरालाल के पास आकर उसे गले लगा लिया। "मुझे आज तक ऐसी शान्ति कभी नहीं मिली। ले लो ये सारे आभूषण, चूड़ियाँ, रत्न।" उसने अपनी गठरी खोली और हीरालाल ने चमकदार कण्ठे, चूड़ियाँ, अंगूठियाँ, रत्न आदि देखे।

"मैं चोर हूँ", उस आदमी ने कहा, "और ये सब मैंने कई घरों से चुराये हैं। मैंने अब चोरी छोड़ देने का निश्चय किया है और मुझे इन सब चीजों की जरूरत नहीं है। ये तुम्हें काम देंगे।" उसने लड़के के हाथ में गठरी थमा दी और उसके

प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह चला गया। हीरालाल अवाक्-सा थोड़ी देर वहाँ खड़ा रहा, फिर अचानक प्राप्त उस धन को 'सावधानी' से अपनी गठरी में बाँध आगे चल पड़ा।

दुर्भाग्यवश हीरालाल अभी बच्चा होने के कारण नहीं समझ सका कि चोर, दन्तकथाओं के तेन्दुए की तरह जो अपनी चित्ती बदलना नहीं चाहता, बहुत दिनों तक शान्त नहीं बैठ सकता । बालक से अलग होने पर वह गंभीरता से विचार करने लगा कि वह बच्चे से अपना धन कैसे वापस ले ले। उसने पहले उसकी बाँसुरी की चोरी करने के लिए सोचा। लेकिन उसे बाँसुरी बजाना नहीं आता था। नहीं, उसे बच्चे से आभूषण छीन-झपट कर नहीं लेना चाहिये और इसे एक और चोरी-डकैती की तरह नहीं लगना चाहिये।

तब तक चोर दूसरे गाँव में पहुँच चुका था। वह एक व्यापारी के रूप में गाँव के सरपंच के पास पहुँचा। उसने एक कहानी गढ़ी और अन्त में कहा, ''इस बालक-ठग ने धोखा देकर मेरे सारे आभूषण लूट लिये। मैं तो बर्बाद हो गया।'' उसने किसी तरह कुछ घड़ियाले आँसू बहाये जो उसके गालों पर टपक पड़े।

''घबराओ नहीं दोस्त'', गाँव के मुखिया ने विश्वास दिलाया, ''वह बालक इस गाँव से होकर ही गुजरेगा। उसके आते ही उसे गिरफ्तार कर लिया जायेगा।'' फिर उसने कुछ तगड़े लोगों को लड़के को पकड़ कर अपने पास लाने का आदेश दे दिया।

हीरालाल ने गाँव में प्रवेश करते ही कुछ लोगों की भीड़ देखी। कुछ लोग लाठी और भाले से लैस थे। वह उन्हें देखकर चकित रह गया। उसने महसूस किया कि विरोध करना बेकार है। लोग उसके हाथ बाँध कर उसे सरपंच के पास ले गये।

''मैंने क्या अपराध किया है, मालिक?'' लड़के ने बड़ी विनम्रता से पूछा।

''जैसेकि तुम्हें मालूम नहीं हो!'' सरपंच ने उपहास के साथ कहा। ''ये हमारे दोस्त हैं जिन्हें तुमने लूटा है। इनके आभूषण कहाँ हैं? जल्दी निकालो।''

''मैं देता हूँ, लेकिन पहले मेरे हाथ तो खोलिये।'' उसने निर्भीक होकर कहा। गाँववालों ने उसके हाथ खोल दिये। उसने तुरन्त बाँसुरी

बाहर निकाल कर उसे बजाना शुरू कर दिया। बाँसुरी से मंत्रमुग्ध कर देनेवाला संगीत निकलने लगा। वहाँ बैठे सभी लोग, सरपंच तथा सरपंच का तथाकथित दोस्त भी, नाचने लगे। किसी तरह व्यापारी वेशधारी चोर चिल्लाकर बोल सका, ''नहीं, उसे बाँसुरी मत बजाने दो। वह कभी बजाना बन्द नहीं करेगा!''

सरपंच समझ नहीं सका कि उसका तात्पर्य क्या है? क्या इसके पहले लड़के से उसकी भेंट हो चुकी है? नहीं तो उसकी बाँसुरी के बारे में उसे कैसे मालूम होता? तब तक और भी गाँववाले उस मुग्धकारी संगीत सुनकर आ गये और नाचने लगे। हीरालाल बाँसुरी बजाता गया।

''रुक जाओ, कृपया, रुक जाओ!'' वह चिल्ला पड़ा। ''मैं अपराध स्वीकार करता हूँ।'' हीरालाल ने बाँसुरी हटा ली। कुछ देर हाँफने के बाद वह बक पड़ा, ''वह चोर नहीं है! मैंने ही लोगों से आभूषण लूटे हैं। उसकी गठरी में वही लूट का माल है जो मैंने उसे बाँसुरी बजाना बन्द करने के बदले दिया है। उसने पहले ही मुझे दण्ड दे दिया है और मैं नहीं चाहता कि किसी और को भी यह दण्ड मिले।''

सरपंच ने राहत की सांस ली। तब तक हीरालाल ने डाकू द्वारा दिये गये आभूषणों की थैली निकाल कर सरपंच के आगे रखते हुए कहा, ''उसने आभूषणों की यह गठरी मुझे देते समय अब चोरी नहीं करने का वचन दिया था। सब के सामने अब फिर इससे वचन लीजिये कि अब से एक नई जिन्दगी शुरू करेगा।

डाकू ने औपचारिक शपथ ली। सरपंच ने कहा, ''हम लोग तुम्हें आजाद कर रहे हैं, लेकिन फिर कभी पकड़े गये तो दण्ड दिया जायेगा।''

चोर के भीड़ की दृष्टि से ओझल होते ही लोगों ने हीरालाल का स्वागत करते हुए उसकी जय-जयकार की, ''तुम हमारे नायक हो! कृपा करके अब हमारे साथ इसी गाँव में रह जाओ!''

सरपंच ने तब कहा, ''आ जाओ, हीरालाल! पहले हमलोगों के साथ भोजन कर लो। बाद में तुम्हारे निवास का प्रबन्ध कर देंगे।''

हीरालाल प्रसन्न था, क्योंकि अब बनारस जानेवाले थकाऊ मार्ग पर जाने का प्रश्न नहीं रहा।

पाठकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के लिए २५० रु.

निम्नलिखित कहानी को पढ़ोः

चन्दन सिंह तथा मोहन सिंह पड़ोसी थे। चन्दन सिंह एक गरीब किसान था जब कि मोहन सिंह एक सम्पन्न जमीन्दार था। एक दिन चन्दन सिंह ने देखा कि उसके खेत में एक बड़ा कद्दू उगा है। वह उसे लेकर महल में गया और राजा को उसने उसे उपहार के रूप में भेंट कर दिया। दरबारियों ने चन्दन सिंह की उपलब्धि के लिए उसकी प्रशंसा की और राजा को सलाह दी कि उसे यथायोग्य पुरस्कार मिलना चाहिये। राजा ने उसे एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ दीं।

यह मालूम होने पर मोहन सिंह को आश्चर्य हुआ। यदि हाथी के समान विशाल कद्दू को पुरस्कार में सौ स्वर्ण-मुद्राएँ मिल सकती हैं तो राजा को हाथी ही भेंट में दे दें तो उसे एक हजार मुद्राओं की आशा तो करनी ही चाहिये। मोहन सिंह ने ऊँची कीमत देकर हाथी का एक बच्चा खरीदा और महल में ले जाकर राजा को भेंट कर दिया। दरबारी चुपचाप थे। "इस व्यक्ति को पुरस्कार में क्या दें?" राजा ने अपने मंत्री से पूछा।

- ◆ तुम्हारी समझ के अनुसार मंत्री ने क्या उत्तर दिया होगा?
- ◆ और राजा ने उसे कैसे कार्यान्वित किया?

अपनी प्रतिक्रिया १००-१५० शब्दों में दो और कहानी का एक उपयुक्त शीर्षक बताओ। अपनी प्रविष्टि के साथ निम्नलिखित कूपन को भर कर एक लिफाफे में भेज दो जिस पर "पढ़ो और प्रतिक्रिया दो" लिखा हो।

अन्तिम तिथिः मार्च ३१, २००५

नाम -- **उम्र** ------------ **जन्मतिथि** ------------------------

विद्यालय -- **कक्षा** ------------

घर का पता --

-- **पिनकोड** ----------------------

अभिभावक के हस्ताक्षर **प्रतियोगी के हस्ताक्षर**

चन्दामामा इंडिया लिमिटेड

८२, डिफेंस ऑफिसर्स कालोनी, इक्कातुथंगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

मूर्ख राजा

प्राचीन काल में मगध पर राजा बिरूप सेन राज्य करते थे। उन दिनों बोधिसत्व ने एक हाथी का रूप धारण किया। वह हाथी सफ़ेद रंग का था और देखने में ऐरावत जैसा लगता था। इस वज़ह से मगध राजा ने उसे अपना पट्ट हाथी बनाया।

एक पर्व के दिन सारा मगध राज्य इन्द्र लोक जैसा अलंकृत किया गया। सारे नगर में वैभवपूर्वक जुलूस निकालने का इंतजाम किया गया, इस वास्ते पट्ट हाथी को भी ख़ूब सजाया गया। सैनिक आगे पीछे चल रहे थे, बीच में राजा पट्ट हाथी के हौदे पर बैठकर जुलूस के साथ चल रहे थे।

राज पथ पर इकट्ठे हुए लोग उत्साह में आकर हाथी की तारीफ़ करने लगे, ''ओह, यह ग़जराज कैसे ठाटसे चल रहा है, इसकी सुंदरता देखने पर ऐसा मालूम होता है कि यह किसी चक्रवर्ती राजा का वाहन बनने योग्य है।''

हाथी की यह तारीफ़ सुनकर राजा अपने मन में क्रोधित हुए और सोचने लगे, ''जनता को राजा के प्रति अधिक आदर दिखाना चाहिए, लेकिन ये सब इस हाथी के प्रति ज़्यादा आदर दिखा रहे हैं। एक भी आदमी हौदे पर बैठे मेरी तरफ़ आँख उठाकर देख नहीं रहा है! सबकी नज़र यह हाथी अपनी ओर खींच रहा है। किसी तरह से इसका संहार करवाना चाहिए।''

यों विचार करके राजा ने दूसरे दिन महावत को बुलाकर पूछा, ''सुनो, हमारा पट्ट हाथी अच्छी तरह से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुका है न?''

''महाराज, उसे प्रशिक्षण देकर हौदे का हाथी मैंने ही बनाया है।''

महावत ने बड़े ही आत्म-विश्वास तथा दर्प के साथ जवाब दिया।

''तुम्हारी बातों पर मुझे यक़ीन नहीं हो रहा है ! मेरा विश्वास है कि यह हाथी बड़ा ही उद्दण्ड है।'' राजा ने कहा।

''महाराज, ऐसी कोई बात नहीं है!'' महावत ने कहा।

"अच्छी बात है ! तुम्हारे कहे अनुसार ऐसा अच्छा प्रशिक्षण अगर इस हाथी को मिला है तो उसे सामने दिखाई देनेवाली पहाड़ी की चोटी पर चढ़ा सकते हो?" राजा ने पूछा।

"क्यों नहीं महाराज? मैं चढ़ा सकता हूँ!" यों कहकर महावत ने कुछ ही क्षणों में हाथी को पहाड़ी के शिखर पर चढ़ा दिया।

इसके बाद राजा अपने परिवार के साथ हाथी के पीछे पहाड़ पर चढ़ गये। पहाड़ी का शिखर थोड़ी दूर तक समतल था और इसके बाद नुकीला था। राजा ने वहाँ पर हाथी को रोकने का आदेश दिया। तब बोले, "मैं अब देखना चाहता हूँ कि तुमने हाथी को कैसा प्रशिक्षण दिया है! क्या तुम इस हाथी को उसके तीन पैरों पर खड़ा कर सकते हो?"

दूसरे ही क्षण महावत ने हाथी के सर पर अंकुश छुआकर इशारा करते हुए कहा, "बाबा, राजा का आदेश है कि तुम अपने तीन पैरों पर खड़े हो जाओ।"

हाथी ने ऐसा ही किया। इस पर राजा ने कहा, "शाबाश, बहुत बढ़िया है!"

फिर बोले, "अब क्या तुम हाथी को उसके आगे के पैरों पर खड़ा कर सकते हो?"

महावत के इशारा करते ही हाथी अपने अगले पैरों पर खड़ा हो गया। इस पर राजा फिर बोले, "देखो, हाथी क्या अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो सकता है? आज्ञा देकर दिखाओ।" तत्काल हाथी अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया।

"क्या यह हाथी एक ही पैर पर खड़ा हो सकता है?" राजा ने पूछा।

हाथी बड़ी आसानी से एक ही पैर पर खड़ा हो गया। इतनी सारी यातनाएँ देने पर भी हाथी पहाड़ की चोटी पर से नीचे न गिरा, तब राजा मन ही मन दुखी हो बोले, "ऐसे काम तो थोड़ा बहुत प्रशिक्षण प्राप्त कोई भी हाथी कर सकता है। मैं अब बस, एक परीक्षा और लेना चाहता हूँ।"

"महाराज, ऐसा ही कीजिए! बताइये, वह परीक्षा कैसी है ?" महावत ने पूछा।

"हाथी जैसे अपने पैरों की मदद से पहाड़ पर चल सकता है, वैसे ही हवा में भी उसे चलाइये। यह मेरी आज्ञा है।" राजा ने कहा।

ये बातें सुनने पर महावत को राजा का कुविचार मालूम हो गया। पर महावत थोड़ा भी

घबराया नहीं। उसने गुप्त रूप से हाथी के कान में यों कहा, "बाबा, राजा ने ऐसी एक योजना बनाई है जिससे आप पहाड़ी की चोटी पर से नीचे गिरकर मर जायें ! राजा तो आपके महत्व को नहीं जानते। यदि आप सचमुच शक्ति रखते हैं तो इस चोटी के छोर से आगे बढ़कर हवा में पैदल चलिये।"

अनोखी महिमा और अद्‌भुत शक्तियों वाला वह हाथी पहाड़ी के शिखर पर आगे बढ़ा और हवा में तैरता गया। इस पर महावत ने राजा से कहा, "हे राजन्, यह हाथी साधारण नहीं है, देवता-अंश वाला है। इसका महत्व न जानने वाले आप जैसे व्यक्ति के लिए यह पट्ट हाथी बनने योग्य नहीं है। सही मूल्यांकन न कर सकने वाले मूर्ख सिर्फ़ हाथी ही नहीं, बल्कि अन्य प्रकार की अमूल्य वस्तुओं को भी खो बैठते हैं। मूर्ख व्यक्ति सबके सामने अपनी मूर्खता को स्वयं प्रकट करता है।"

इसके बाद हाथी हवा में उड़ते जाकर काशी राज्य में पहुँचा, और वहाँ के राजा के उद्यान वन पर आसमान में खड़ा रहा। इसे देख नगर के नागरिक कोलाहल करते वहाँ पर आ पहुँचे।

यह ख़बर राजा को मिली। राजा ने उद्यान में पहुँच कर हाथ जोड़कर कहा, "हे गजराज, तुम्हारे आगमन से मेरा राज्य पवित्र हो गया है। तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि धरती पर उतर आओ।"

राजा के मुँह से ये बातें सुनकर हाथी के रूप में स्थित बोधिसत्व नीचे उतर आये। महावत ने सारा वृत्तांत सुनाया। इस पर राजा और प्रजा सभी परमानंदित हुए।

इसके बाद राजा ने हाथी को खूब सजवा कर एक सुंदर शाला में रखा। अपने राज्य के तीन भाग करके एक भाग को हाथी के रूप में स्थित बोधिसत्व के पालन-पोषण के लिए, और दूसरा हिस्सा महावत को दे दिया। शेष हिस्से को अपने अधीन में रख लिया।

जिस वक़्त बोधिसत्व काशी राज्य में पहुँचे, तब से लेकर काशी राज्य का वैभव बढ़ता गया। प्रजा हर तरह से खुशहाल हो गई और राज्य में किसी प्रकार की समस्या न रही। इस प्रकार उनका यश चारों तरफ़ फैल गया।
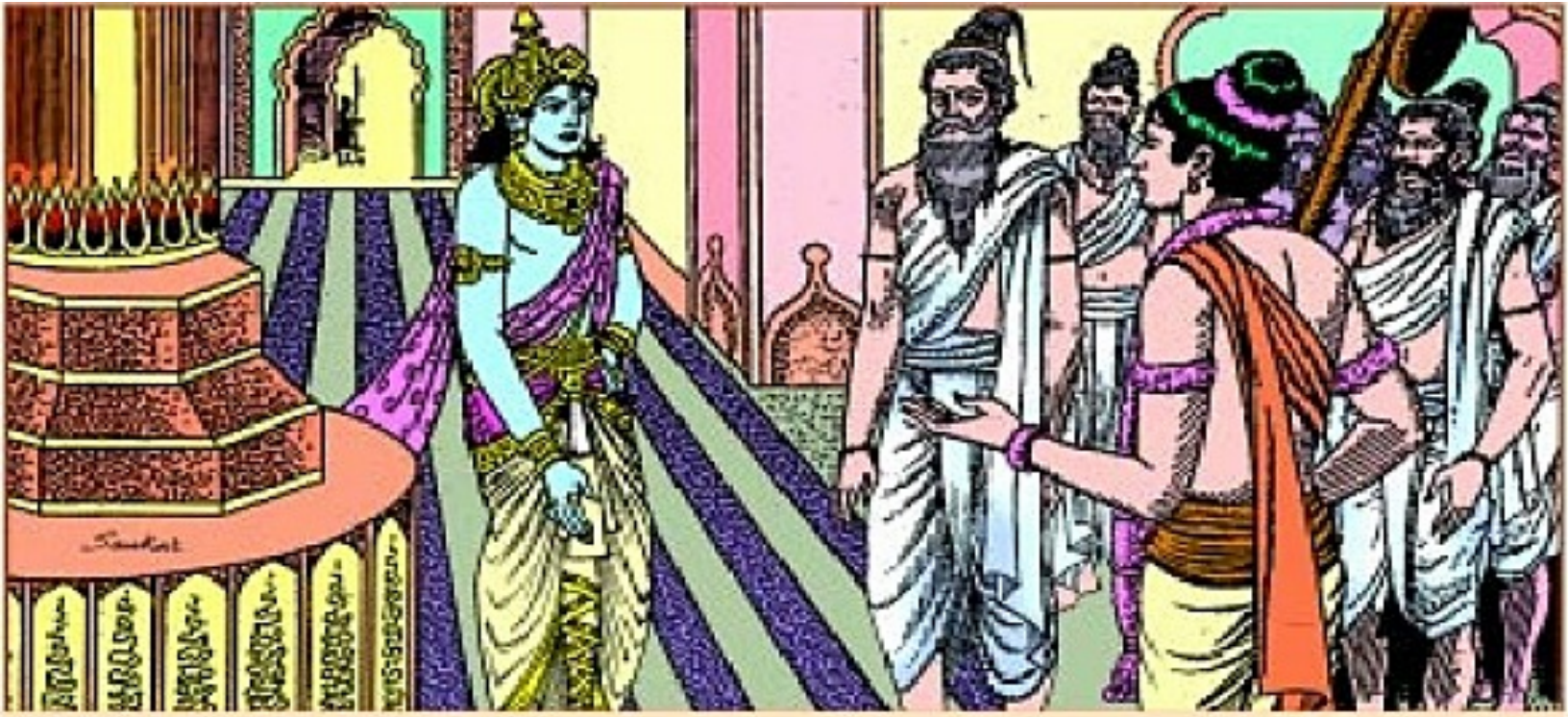
विष्णु पुराण

रामचंद्र जी का राज्याभिषेक हुआ। उन्होंने भरत और शत्रुघ्न के सहयोग से राज्य का अच्छे ढंग से संगठन किया। तब वे आदर्शपूर्वक राज्य-संचालन करने लगे। उनके राज्य में जनता हर तरह से सुखी और संपन्न थी।

एक दिन एक गाँव से एक ब्राह्मण अपने पाँच वर्ष के पुत्र के शव के साथ आया और राजमहल के द्वार पर खड़े होकर जोर-जोर से रोने लगा। अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु पर रोते हुए ब्राह्मण बोला, ''यदि राजा का सुशासन होता तो देश में इस प्रकार की अकाल मृत्यु न होती। इक्ष्वाकु राजाओं के शासन में जनता को किसी प्रकार का कष्ट न था, पर रामचंद्रजी के शासन काल में देश अनाथ होता जा रहा है।''

रामचंद्र ब्राह्मण के मुँह से यह शिकायत सुन कर अत्यंत दुखी हुए। इसके बाद उन्होंने उसी वक्त अपने मंत्री, वसिष्ठ आदि अनेक ब्राह्मणों को बुलवाकर उनको ब्राह्मण-बालक की असामयिक मृत्यु का समाचार सुनाया। इस पर नारद ने रामचंद्र जी को बताया कि शंबूक नामक एक शूद्र बड़ी भारी तपस्या कर रहा है। यह तो युग-धर्म के विरुद्ध है। इसीलिए उस बालक का असामयिक निधन हो गया है।

इस पर रामचंद्र जी ने लक्ष्मण को आदेश दिया, ''लक्ष्मण, तुम जाकर उस ब्राह्मण को सांत्वना देकर उस बालक के कलेवर को तेल-भाण्ड में सुरक्षित रखो।'' इसके बाद रामचंद्र जी अपने हाथ में अस्त्र लेकर पुष्पक विमान पर सवार हुए। वे पूर्व, पश्चिम और उत्तर की दिशाओं में अन्वेषण कर अंत में दक्षिण की ओर चल पड़े।

वहाँ पर एक सरोवर में औंधे सर एक आदमी भयंकर तपस्या कर रहा था।

वे तुरंत पुष्पक विमान से उतर पड़े और म्यान से तलवार खींचकर उस व्यक्ति को मार डाला। शंबूक के सर ने प्रसन्नता पूर्वक आँखें खोलीं और रामचंद्रजी को देखकर कहा, 'हे रघुराम! मृत्यु किसी भी दृष्टि से देखा जाए, अनिवार्य है। आप केवल निमित्त मात्र हैं। आप वर्णाश्रम धर्मों को मानने वाली जनता के शासक हैं। राजा तो जनता के सेवक हैं। आपने अपने धर्म का पालन किया, इसलिए आपको किसी प्रकार का पाप न लगेगा। मैं कुल और पेशे से परे एक योगी हूँ। मैं विष्णु के सान्निध्य को प्राप्त करने जा रहा हूँ।'' यों कहकर सर ने आँखें मूंद लीं।

शंबूक की पत्नी कपिला ने रामचंद्र जी के समीप पहुँच कर उन से कहा, ''हे सीतापति! राजधर्म के पालन में भविष्य में आपको जिन कठोर परीक्षाओं का सामना करना है यह उन परीक्षाओं का आरम्भ मात्र है। मैं अपने पति के साथ खुशी से चली जा रही हूँ। आप दृढ़ होकर अपने कर्तव्य का पालन कीजिए।'' यों समझाकर कपिला ने भी अपने पति के साथ प्राण त्याग दिये।

रामचंद्र जी जब अयोध्या के लिए रवाना हुए, तो रास्ते में उन्होंने उलू के निवास के पेड़ के घोंसले पर आक्रमण करने वाले एक चील के सिर पर इस प्रकार थपकी दी, मानों उसे दण्ड दे रहे हों? दूसरे ही क्षण चील के रूप में स्थित ब्रह्मदत्त शाप से मुक्त हो गये।

एक दिन विश्वामित्र रामचंद्र जी के सभा भवन में आये और अपने अपमान करने वाले शकुंत नामक राजा का वध करने का आदेश दिया। तत्काल रामचंद्रजी अपने गुरु के आदेश का पालन करने के लिए शकुन्त का वध करने चल पड़े।

हनुमान की माता अंजना देवी ने शकुन्त को शरण दी। हनुमान ने अपनी माता के वचन की रक्षा करने के लिए रामबाण का सामना करना चाहा और नयन मूंद कर राम नाम का जाप करते हुए खड़े हो गये।

रामचंद्र जी का बाण हनुमान के हृदय में लीन हो गया। यह सब देखकर विश्वामित्र ने अपना हठ त्याग दिया तथा शकुन्त को क्षमा कर उसे आशीर्वाद दिया।

एक दिन आधी रात के समय रामचंद्रजी के

शयन कक्ष के सामने एक कुत्ते ने न्याय के लिए आर्तनाद किया। इस पर रामचंद्र जी चौंक कर जाग उठे और नीचे उतर कर कुत्ते के घाव पर अपने हाथ को दबाकर रखा, जिससे खून बहना बन्द हो गया। कुत्ते ने बताया कि वह अपने पिछले जन्म में एक पुजारी था।

पर एक दिन उसी राज्य के एक नीच व्यक्ति के मुँह से ये शब्द निकले – "पराये घर में रहने वाली पत्नी को रखकर अपनी निर्लज्जता का परिचय देने वाला मैं रामचंद्र नहीं हूँ।"

इस पर रामचंद्र जी ने लक्ष्मण को आदेश दिया कि वह सीता जी को वन में छोड़ आये। यह सुनकर लक्ष्मण आवेश में आ गए। इस पर रामचंद्र जी उसको समझाते हुए बोले, "हे लक्ष्मण! एक छोटे व्यक्ति के मुँह से दंभ के रूप में जो शब्द निकले हैं ऐसा ही भाव अनेक लोगों के मन में गुप्त रूप से रह सकता है।

"राज्य के माने मिट्टी नहीं, मानव हैं। विविध वर्णों और वर्गों में बंटे हुए लोगों पर शासन करना तलवार की धार पर चलने के बराबर होता है। इसमें स्वार्थ के लिए थोड़ा सा भी स्थान नहीं होता। प्रजा के मनोभावों को अपना कर्तव्य मान कर राजा को अपने हृदय को पत्थर बनाना होता है। मैं इस वक्त ऐसे ही पद पर हूँ।"

सीता जी के मन में अनेक दिनों से यह इच्छा थी कि वन में मुनियों के साथ आनन्द पूर्वक विहार करें। इस समय वह गर्भवती थीं। इसलिए उनकी इच्छा की पूर्ति के बहाने लक्ष्मण ने रामचंद्रजी के आदेश पर उन्हें एक घने जंगल में छोड़ दिया। फिर दुखी होकर विलाप करने लगे, "ओह, राम -रावण युद्ध में जब मैं बेहोश हो गया था, उस वक्त हनुमान ने संजीवनी औषध लाकर मुझे यही दिन देखने को जिलाया था !"

इसके बाद महर्षि वाल्मीकि सीता जी को अपने आश्रम में ले गए। आश्रम में ही सीता जी ने कुश-लव नामक दो सुन्दर पुत्रों को जन्म दिया।

एक बार अयोध्या राज्य में बहुत दिनों तक वर्षा न होने की वजह से अकाल पड़ गया। सूखी धरती में दरारें पड़ गईं। इसलिए गुरुजनों ने उन्हें अश्वमेधयज्ञ करने की सलाह दी। यज्ञ के लिए सीता जी का होना आवश्यक था। इसलिए रामचंद्र जी ने सीता जी की सोने की मूर्ति अपने पार्श्व में रखवा कर यज्ञ किया।

अश्वमेधयज्ञ के घोड़े को केवल रघुवंशी ही नियंत्रण में रख सकते थे। उस अश्व को महर्षि वाल्मीकि के आश्रम के पास लव और कुश ने पकड़ कर पेड़ से बाँध दिया।

यज्ञ के अश्व को छुड़ाने के लिए सेना को लेकर भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण आये। पर उन सबको लव-कुश ने बेहोश कर दिया। तब स्वयं रामचंद्र जी को आना पड़ा।

लव-कुश अपनी माता का स्मरण कर रामचंद्र जी पर बाण छोड़ने लगे। उन बाणों के आघात से रामचंद्र जी बेहोश हो गए। इस पर सीता जी वहाँ आ पहुँचीं और श्रीराम के चरणों का स्पर्श करके उनको जगाया। तब रामचंद्र जी के साथ अन्य सभी लोग भी होश में आ गये।

इसके बाद महर्षि वाल्मीकि ने रामचंद्रजी के हाथों में उनकी पत्नी और पुत्रों को सौंप दिया।

रामचंद्र जी सीता जी के साथ सिंहासन पर बैठे। लव और कुश को अपनी जांघों पर बिठा कर उन्हें युवराजा घोषित किया।

तदनंतर रामचंद्र जी ने सीता जी को सुझाया कि वह अपनी पवित्रता को साबित करने के लिए उचित प्रकार से शपथ लें।

सीता जी अयोध्या नगर के मध्य खड़ी हो गईं और आकाश की ओर दृष्टिपात करके ईश्वर से अयोध्या राज्य पर वर्षा करने की प्रार्थना की। उसी समय सारा आकाश घने बादलों से छा गया और अमृत जैसी जल धाराओं की वर्षा होने लगी।

इस प्रकार उचित प्रमाण देकर सीता जी पृथ्वी की ओर दृष्टि केंद्रित करके बोलीं, "माँ, रघुवंश के दीपक मेरे पुत्र अपने पिता के आश्रय में चले

गए। अब मैं कुछ और नहीं चाहती। इसलिए तुम मुझको स्वीकार करो।''

दूसरे ही क्षण पृथ्वी काँप उठी और दो भागों में फट गई। चारों तरफ़ दिव्य प्रकाश फैल गया। रत्नजड़ित सिंहासन पर भू देवी पृथ्वी पर प्रकट हुईं और सीताजी को अपनी गोद में लेकर फिर से पृथ्वी में समा गईं। उस समय स्वर्ग से फूलों की वर्षा हुई और पृथ्वी की दरार भर गई।

रामचंद्र जी ने पृथ्वी को फिर से चीरने के लिए धनुष पर बाण चढ़ाया। उसी समय यह आकाशबाणी सुनाई पड़ी, ''हे रामचंद्रजी ! आप भू देवी पर क्रोध न कीजिए। सीता जी पृथ्वी की पुत्री हैं और वह वहीं वापस चली गई हैं।''

रामचंद्र जी अपने पुत्रों के साथ सुखमय जीवन बिताते हुए अनेकानेक युगों तक राज्य करते रहे। एक दिन काल ब्राह्मण के बेश में आकर रामचंद्र से बोले, ''महानुभाव, आपको एक देव-रहस्य बताने आया हूँ। राजमहल के द्वार पर आप लक्ष्मण को पहरा देने के लिए कहिए। यदि लक्ष्मण किसी को महल के अन्दर भेज दें तो उन्हें मृत्यु का दण्ड भोगना पड़ेगा।'' इसके बाद लक्ष्मण द्वार पर पहरा देने लगे। यमराज ने अपना असली रूप धारण कर रामचंद्र जी को स्मरण दिलाया, ''भगवन्! आपके इस अवतार का उद्देश्य पूर्ण रूप से संपन्न हो गया है। इसलिए पुनः आप विष्णु के रूप में वैकुण्ठ में पधारने की कृपा करें।''

उसी वक्त दुर्वासा मुनि आ पहुँचे। उन्होंने लक्ष्मण को बताया कि उनको तत्काल रामचंद्र जी से मिलना है। अन्यथा पूरे रघुवंश को उनके शाप का शिकार होना पड़ेगा। इसलिए लक्ष्मण ने दुर्वासा मुनि को महल के अन्दर जाने दिया और स्वयं सरयू नदी में जाकर डूब गए।

रामचंद्र जी ने लव-कुश का राज्याभिषेक करके राज्य का सारा भार उन्हें सौंप दिया।

श्रावण का महीना था। सरयू नदी उमड़ रही थी। उसके प्रवाह में गति थी। वह पूर्णिमा का दिन था और साथ ही चंद्रग्रहण का पर्व भी।

रामचंद्र जी सरयू नदी की ओर चल पड़े। उनके दोनों पार्श्वों में भरत और शत्रुघ्न थे और मंगल तूर्यनादों से आकाश गूँज रहा था। असंख्य प्रजाजनों ने रामंचद्र जी का अनुसरण किया।

रामचंद्र जी नदी के जल में उतर गए। उनके पीछे उनके छोटे भाई उतरे। उसी समय चंद्रग्रहण

समाप्त हुआ और पूर्ण चंद्रमा अपनी कांति से शोभायमान हो उठा। आसमान से देवताओं ने फूलों की वर्षा की। साम, देवगांधार, हिन्दोल रागों की मधुर ध्वनियाँ मानो एक साथ झंकृत हो उठीं।

चारों दिशाओं में दुधिया चाँदनी छाई हुई थी। क्षीर सागर जैसी सरयू नदी फूलों से भरी उत्ताल तरंगों के साथ तेज गति से बह रही थी।

इसके पूर्व ही लक्ष्मण शेष शैया तथा सीता लक्ष्मी के रूप में रामचंद्र जी की प्रतीक्षा कर रहे थे। भरत और शत्रुघ्न विष्णु के शंख और चक्र बन गए। तब विष्णु रामावतार को त्याग कर पुनः विष्णु रूप में प्रकट हो गये। महर्षि सूत रामावतार की कथा समाप्त कर कृष्णावतार की कहानी सुनाने लगे।

किसी सन्दर्भ में शिव जी ने अपने प्रमुख भक्त दानवों का विष्णु के द्वारा संहार होते देख अपनी भृकुटियाँ चढ़ा लीं। उनकी भृकुटियों में से सहस्त्र कवच नामक भयंकर राक्षस उत्पन्न हुआ। उसके शरीर पर तहों के रूप में कुल एक हज़ार कवच थे। अपने कुण्डल की महिमा के कारण वह अजेय था। इसीलिए उसने एक दिन घमण्ड में आकर भीषण गर्जन करके चुनौती दी, ''मैं कोई मूर्ख राक्षस मात्र नहीं हूँ। रुद्र के अंश से पैदा हुआ हूँ। अगर विष्णु में शक्ति है तो वे मेरे सामने आने का साहस करें।''

इस चुनौती को सुनकर विष्णु ने नर और नारायण नाम के जुड़वें ऋषियों के रूप में अवतार लिया। नर-नारायण सहस्त्र कवच को पराजित करने के लिए तपस्या करने लगे।

नारायण और नर की तपस्या निरन्तर चलती रही। उनमें से एक तप करते रहे तो दूसरे धनुष-बाण धारण कर सहस्त्र कवच के साथ युद्ध करते रहे। इस प्रकार हज़ारों वर्षों तक युद्ध चलता रहा। इन युद्धों में नर-नारायण ने सहस्त्र कवच के नौ सौ निनानवें कवचों को छेद डाला। इसके बाद सहस्त्र कवच एक कवच के साथ भाग कर सूर्य के अन्दर छिप गया।

इस पर विष्णु ने कहा, ''कायर कहीं का। डींग मार कर आखिर भाग गया और अपनी जान बचाने के लिए छिप गया। अब कृष्णावतार में तेरा अहंकार चूर-चूर कर दूँगा।''

विनय का शास्त्र ज्ञान

वेणु शर्मा प्रसिद्ध वैद्य हैं। अपने गाँव में ही नहीं, आसपास के गाँवों में भी उनकी बड़ी ख्याति है। हर कोई उनकी चिकित्सा-पद्धति की खूब प्रशंसा करता है। एक दिन रोगियों की जांच और उन्हें स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सलाह देने के बाद घर के अंदर जाने ही वाले थे कि बीस साल का एक युवक वहाँ आया। उसने शर्मा को सविनय प्रणाम किया।

वेणु शर्मा यह सोच कर कि वह शायद किसी रोग से पीड़ित है, उससे पूछने ही जा रहे थे कि इतने में उस युवक ने कहा, ‘‘मेरा नाम विनय है। पिछले दस सालों से प्रसिद्ध वैद्यों की सेवा में रह चुका हूँ और वैद्य शास्त्र संबंधी बहुत-से ग्रंथों का पठन भी किया। अब आपकी सेवा करते हुए स्वयं वैद्य बनकर रोगियों की चिकित्सा करना चाहता हूँ। कृपया इसकी अनुमति और आशीर्वाद दें।’’

उसकी बातों को सुन कर वेणु शर्मा को लगा कि उसमें विद्या कम और आवश्यकता से अधिक दंभ है। उन्होंने युवक से कहा, ‘‘मेरी सेवा-शुश्रूषा तुम किसी भी दिन शुरू कर सकते हो। अभी-अभी ख़बर मिली है कि शरभ ने अपने घर के पिछवाड़े के केले के पेड़ के पत्तों को काटते हुए अपना हाथ काट लिया। उसकी फ़ौरन चिकित्सा होनी चाहिये। तुम ही बताओ कि अब क्या करें?’’

विनय घबराता हुआ बोला, ‘‘सब ग्रंथ अतिथि गृह में छोड़ आया हूँ। ऐसी दुर्घटनाओं की चिकित्सा के बारे में चरक या सुश्रुत में क्या लिखा है, देखकर आता हूँ।’’ कहकर वह जाने लगा।

वेणु शर्मा ने उसे रोकते हुए कहा, ‘‘तुम अगर चरक व सुश्रुत ग्रंथों को पढ़ने के बाद ही चिकित्सा करोगे तो तब तक शरभ का पूरा रक्त बह जायेगा और वह परलोक सिधार जायेगा। अच्छा यही होगा कि कुछ और समय तक उन ग्रंथों का अध्ययन गंभीरतापूर्वक कर लो।’’

- रमेश पाठक

भगवान से बड़ा मानव

रत्नाकर देश पर मणिकंठ राजा शासन करता था। उसकी कुशलता के कारण उसका राज्य चारों तरफ़ खूब फैल गया। इस बजह से कोने में रहनेबाले लोगों के सुख-दुखों का पता लगाना राजा के लिए मुश्किल मालूम हुआ। इस समस्या के बारे में राजा मणिकंठ ने अपने मंत्रियों की सलाह माँगी। इस पर मंत्रियों ने सलाह दी कि देश को चार प्रमुख भागों में बाँटा जाये और प्रत्येक भाग पर एक योग्य प्रतिनिधि को नियुक्त किया जाये।

राजा ने ऐसा ही कर दिया।

चारों राज प्रतिनिधि प्रति मास अपने -अपने प्रदेश की प्रजा की असुविधाओं का उल्लेख करके उन्हें दूर करने हेतु लिये जानेवाले निर्णयों का ब्यौरा राजा की सेवा में भेजा करते थे।

इस बात में कोई संदेह न था कि राज प्रतिनिधि राजा के प्रति श्रद्धा और भक्ति रखते थे। लेकिन इसी कारण से थोड़ी उलझन पैदा हो गयी। उनमें इस बात की स्पर्धा बढ़ गयी कि अपने अपने प्रदेश को शेष तीनों प्रांतों से अधिक समृद्ध कैसे बनाया जाये ! जनता में उत्साह पैदा करने के लिए उन प्रतिनिधियों ने प्रांतीय तत्वों को उभाड़ दिया।

अलावा इसके जिस प्रांत में जो पैदावार होती थी, उसे दूसरे प्रांत में जाने से राज प्रतिनिधियों ने रोक दिया। राज्य की उत्तरी दिशा में कपास ज़्यादा पैदा होता था, मगर बुनाई में दक्षता रखने बाली जातियाँ दक्षिणी दिशा में फैली थीं। जब राज्य एक इकाई के रूप में था, तब उत्तरी दिशा का कपास दक्षिण के बुनकरों को आसानी से प्राप्त हो जाता था। मगर अब उत्तर के राजप्रतिनिधि ने अपने प्रांत में पैदा होनेवाले कपास को दक्षिण में जाने से रोका और अपने ही प्रदेश के लोगों को बुनाई सीखने पर ज़ोर दिया। ऐसी हालत में दक्षिण के प्रतिनिधि ने अन्य पैदावार ठीक से उपजाने वाले खेतों में कपास

पैदा करने का आदेश दिया। इस वजह से जहाँ अच्छे बुनकर थे, वहाँ अच्छी क़िस्म का कपास पैदा नहीं हुआ और जहाँ अच्छी क़िस्म का कपास पैदा होता था, वहाँ अच्छे बुनकर नहीं रहे। परिणाम स्वरूप वस्त्रों का स्तर बिलकुल गिर गया।

यही हालत लोहे के उद्योगों की भी हो गयी। देश की पूर्वी दिशा में बढ़िया लोहे की खानें थीं। पर पश्चिमी दिशा में कुशल लौहकार कारीगर थे। पूर्वी दिशा के राज प्रतिनिधि ने अपने यहाँ के लोहे को पश्चिम में भेजने पर प्रतिबंध लगाया और अपने ही प्रदेश में लोहे के कारीगरों को शिक्षण देना प्रारंभ किया। इस कारण पश्चिम के राज प्रतिनिधि ने लाचार होकर पड़ोसी देशों से अधिक दाम देकर लोहा ख़रीदना शुरू किया।

केन्द्र में रहनेवाले राजा के पास राज प्रतिनिधियों से जो रिपोर्ट मिलती थी, उन्हें देखने पर राजा को लगता था कि उनके प्रतिनिधि यथा शक्ति देश की उन्नति के लिए श्रम उठा रहे हैं। मगर राजा जानता था कि देश का विकास नहीं हो रहा है। परंतु कमी कहाँ थी, यह बात राजा की समझ में न आती थी। राज प्रतिनिधियों को नियुक्त किये पांच साल बीत गये थे। पर देश पहले की तरह तरक़्क़ी नहीं कर पाया।

इसका कारण जानने के लिए राजा ने राजधानी में विभिन्न प्रकार की गोष्ठियों का इंतज़ाम किया। एक गोष्ठी में भाषण देते हुए सभी व्यापारियों ने बताया कि गत पांच सालों के भीतर व्यापार में खूब विकास हो गया है। इसी प्रकार उद्योगपतियों

ने बताया कि उद्योगों की उन्नति पहले की अपेक्षा कहीं अधिक हुई है। ये सारे भाषण सुनने के बाद राजा की समझ में न आया कि इस उन्नति को देख उसे खुश होना चाहिये या देश में विकास न होने पर चिंता करनी चाहिये।

अंत में एक दिन पंडितों की गोष्ठी हुई। उस गोष्ठी में शशिभूषण नामक पंडित ने अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय देकर राजा से पुरस्कार भी प्राप्त कर लिया।

पुरस्कार प्रदान करते समय राजा ने शशिभूषण से पूछा - "पंडित जी, मैं आपसे पांडित्य संबंधी प्रश्न नहीं पूछूँगा, मगर बहुत समय से एक समस्या मेरे मन को व्याकुल बना रही है, क्या आप उसका समाधान दे सकेंगे?"

"पूछिये, महाराज! मैं यथाशक्ति उत्तर देने

का प्रयत्न करूँगा।'' शशिभूषण ने जवाब दिया।

''इस संसार की सृष्टि भगवान ने की है, इसलिए हम भगवान को सब से बड़ा मानते हैं। मगर क्या भगवान से भी कोई बड़ा आदमी है?'' राजा ने पूछा।

''क्यों नहीं है, महाराज? भगवान से भी बड़ा व्यक्ति मानव है!'' शशिभूषण ने झट जवाब दिया। राजा ने विस्मय में आकर कहा - ''जवाब देने मात्र से आपकी जिम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती, इसे साबित भी करना होगा।''

शशिभूषण ने विनयपूर्वक कहा, ''मैंने अपने अनुभव के आधार पर यह उत्तर दिया है। महाराज, भगवान ने मेरे ललाट पर पांडित्य का संपादन करने को लिखा था। उसके आधार पर मैं उत्तर प्रदेश में शिक्षक के रूप में युवकों को शिक्षा दे रहा था। मगर मैं पूर्वी प्रदेश का निवासी था, इस कारण मुझे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। इसलिए मैंने जो शिक्षा प्राप्त की थी, उसे युवकों में बांटने के काम को तिलांजलि दे दी और फिलहाल मैं खेती करके जीविका चला रहा हूँ। भगवान ने मेरे ललाट पर जो भाग्य देखाएँ खींच दी थीं, उन्हें मानव ने मिटा दिया। अब आप ही बताइये कि इन दोनों में से कौन बड़ा है?''

शशिभूषण की बातें सुन कर राजा की आँखें खुल गयीं। जिस राज्य को एक इकाई के रूप में रहना चाहिए, वह चार छोटे राज्यों में बंट गया है। इस समस्या पर राजा ने फिर से मंत्रियों के साथ चर्चा की। मंत्रियों ने गंभीरतापूर्वक विचार करके यों सुझाव दिये - ''महाराज, बड़े राज्य को छोटे खण्डों में विभाजित करने में कोई गलती नहीं है। प्रांतीय भावनाओं के बढ़ने का कारण यह है कि प्रांत का प्रतिनिधि उसी प्रांत के निवासी को बनाया गया है। मगर एक प्रांत के व्यक्ति को दूसरे प्रांत का राज प्रतिनिधि नियुक्त किये होते तो यह बुरी हालत न हुई होती। इसलिए उनका स्थान-परिवर्तन करवा दीजिए। इससे प्रांतों के बीच की स्पर्धा मिट जाएगी और उनके बीच सहयोग और सहकार की भावना बढ़ेगी।'' राजा ने इन सुझावों पर अमल किया और देश की उन्नति का रास्ता खोल दिया।

21
आर्य
जयनगर में एक पुराने मन्दिर के भग्नावशेष की खुदाई से प्राप्त कनकदुर्गा की प्रतिमा, जो सरदार के पास है, एक नये मन्दिर में स्थापित की जानेवाली है। अपहारक वीर सिंह की दृष्टि, किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि स्वर्ण के लालच में, प्रतिमा पर है। कमाण्डर जबर सिंह तथा सैनिक सरदार के महल को घेर लेते हैं। रक्तपात से बचने के लिए वह, फर्श तोड़ कर प्रतिमा को ले जाने देने के लिए, मान जाता है। नाव में प्रतिमा को ले जाते समय आँधी आ जाती है। प्रतिमा रहस्यमय ढंग से नावों से अदृश्य हो जाती है।
अज्ञात राजकुमार का रहस्य
चित्र : गाँधी अय्या
वीरसिंह जब जबरसिंह के साथ बातचीत कर रहा है, तभी...
महाराज, अमर सिंह आप से मिलना चाहता है।
उसे अन्दर भेज दो।
प्रधान गुप्तचर प्रवेश करता है।
क्या समाचार है, अमरसेन?
महाराज, स्वर्ण प्रतिमा...
हाँ,कहाँ है वह? क्या वह मिल गई?
प्रतिमा सरदार सुखदेव के पास वापस आ गई है। कल नये मन्दिर में इसकी स्थापना की जायेगी।
क्या सुखदेव पर आक्रमण कर प्रतिमा को ले आयें?
नहीं, यह मूर्खता होगी। हमलोग मन्दिर जायेंगे और इसकी स्थापना के पूर्व इसे बलपूर्वक ले आयेंगे। मैं स्वयं वहाँ जाऊँगा।
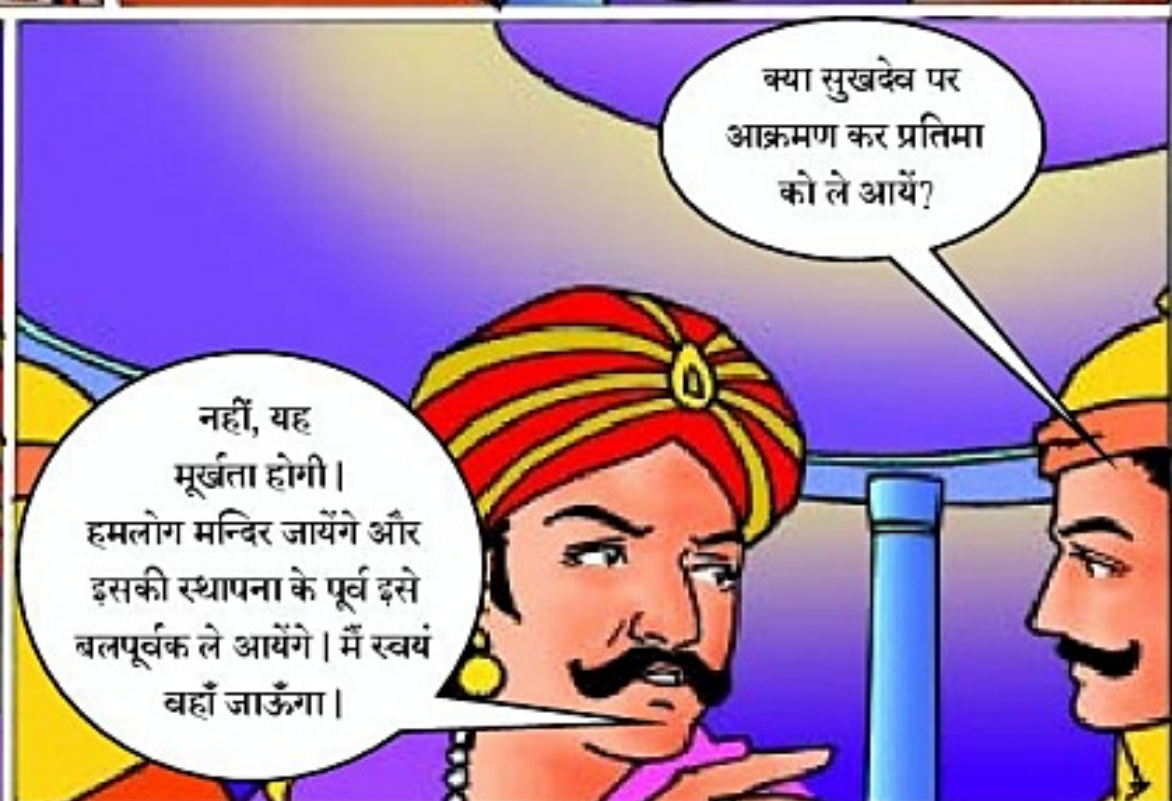
एक आनन्द विभोर शोभायात्रा मन्दिर की ओर बढ़ती है। सुखदेव के पीछे मुनि जयानन्द तथा तीन शिष्य हैं। उनके पीछे सरदार के अंगरक्षकों के साथ दो पालकी हैं। मन्दिर के सामने शोभा यात्रा रुक जाती है।
एक पालकी से सरदार की पुत्री सुकन्या निकलती है।
एक शिष्य दूसरी पालकी का परदा खोलता है।
वह कनकदुर्गा की प्रतिमा को निकाल कर मन्दिर की ओर बढ़ता है।
हे देवी महामयी!
इसकी स्थापना के बाद मुझे बुला लेना, मैं अनुष्ठान सम्पन्न करूँगा।
रुक जाओ! प्रतिमा स्थापित नहीं होगी!
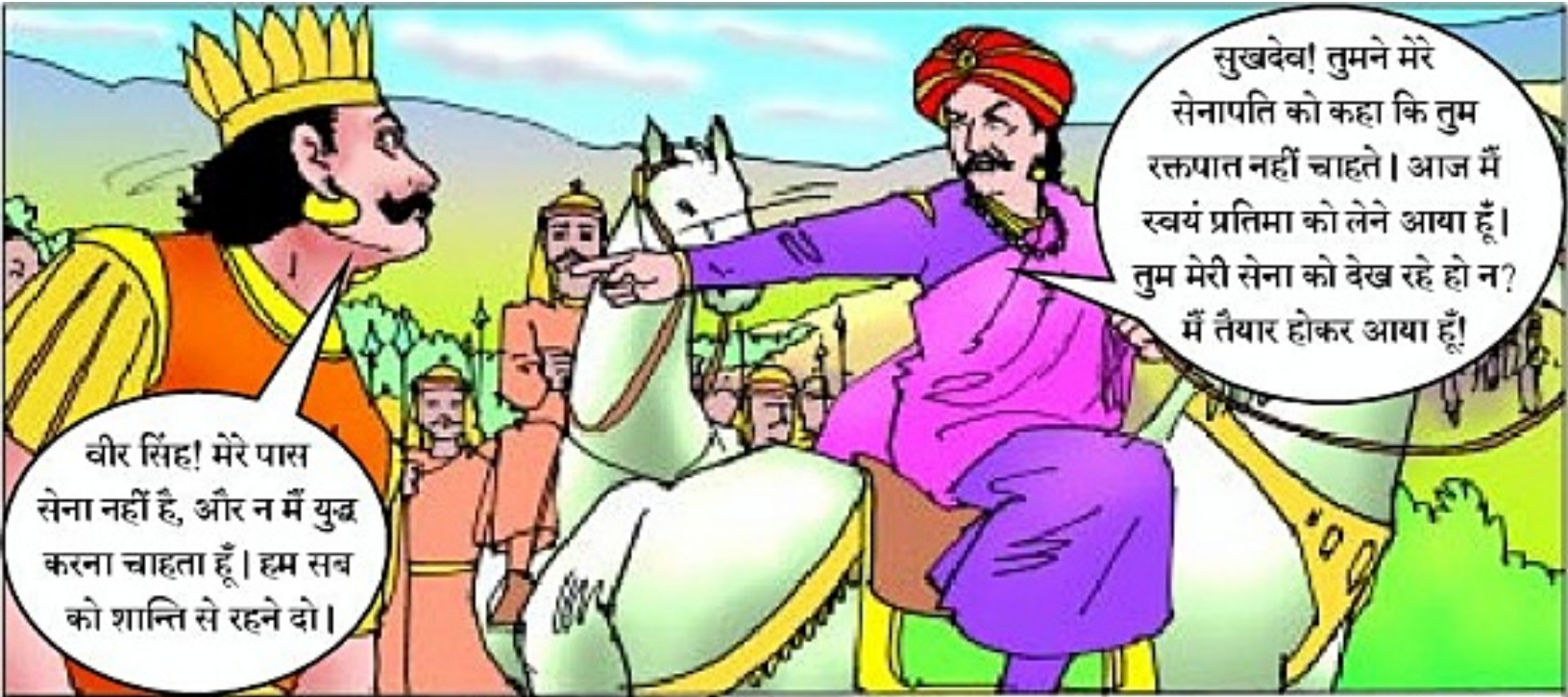
सुखदेव! तुमने मेरे सेनापति को कहा कि तुम रक्तपात नहीं चाहते। आज मैं स्वयं प्रतिमा को लेने आया हूँ। तुम मेरी सेना को देख रहे हो न? मैं तैयार होकर आया हूँ!
वीर सिंह! मेरे पास सेना नहीं है, और न मैं युद्ध करना चाहता हूँ। हम सब को शान्ति से रहने दो।
यह जनता की मनोकामना है कि कनकदुर्गा के लिए एक मन्दिर हो!
मैं इसकी स्थापना नहीं होने दूँगा। मैं आदेश देता हूँ, प्रतिमा को मुझे सुपुर्द कर दो।
यह कौन है?
यह मेरी पुत्री है, सुकन्या। वह पूजन का आरम्भ करेगी।
नहीं! हमलोग प्रतिमा को नहीं देंगे!!
वीरसिंह घोड़े से नीचे उतरता है। वह अचानक अपनी रणनीति बदल देता है।
सुखदेव, हमलोग सौदा कर लें। तुम प्रतिमा रख लो, लेकिन मेरे विवाह के लिए सुकन्या दे दो।
तुम बकवास कर रहे हो, वीरसिंह!
वीरसिंह के चेहरे की मुस्कान क्रोध में बदल जाती है।
तुम अपनी बेटी के शान्तिपुर की रानी बनने के संयोग को ठुकरा रहे हो।
तुम्हारी धृष्टता की सीमा होनी चाहिये!

एक राजा के विवाह-प्रस्ताव को धृष्टता नहीं कहा जा सकता, सुखदेव! विकल्प को सोच लो, स्वर्ण प्रतिमा और तुम्हारी जागीरदारी!
अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए सर्वस्व चला जाये, तब भी मुझे चिन्ता नहीं।
बात बढ़ती देख एक शिष्य सुकन्या के निकट जाकर उसके कान में धीमे से कुछ कहता है। तब....
जाओ, अपने पिता को बता दो।
हाँ, मैं जाऊँगी।
सुकन्या वीर सिंह की धमकियाँ सुनती है।
ठीक है, सर्वस्व खो देने के लिए तैयार हो जाओ, प्रतिमा, जागीर और बेटी!
सुकन्या अपने पिता के निकट जाती है। सुखदेव पीछे मुड़ता है।
पिता, कृपया प्रस्ताव को मान लीजिये और प्रतिमा को बचा लीजिये।
क्या तुम सच कह रही हो, सुकन्या?
सुखदेव चकित है। आखिर उसकी बेटी को ऐसा रुख अपनाने पर किस चीज ने विवश किया?
तुम क्या कह रही हो, मेरी बच्ची?
पिता, मेरे बलिदान से जयनगर का हित होगा।
सुखदेव मुनि जयानन्द और एक शिष्य को अपनी ओर आते देखता है।
मुझे मालूम करना चाहिये कि ये लोग क्या चाहते हैं? क्या शिष्य के मन में कोई योजना है?
क्रमशः

मानव निर्मित महाद्भुत

सांची स्तूप

भोपाल से झांसी जानेवाले रेल मार्ग पर भोपाल से लगभग तीस मीलों की दूरी पर सांची है। सांची बौद्ध खंडहरों के लिए सुप्रसिद्ध है। यहाँ बौद्ध खंडहर जितनी बड़ी संख्या में पाये जाते हैं, उतने देश भर में कहीं और नहीं पाये जाते। कहा जाता है कि यहाँ के स्तूपों से भी बढ़कर जो प्राचीन इमारतें हैं वे हमारे देश में और कहीं नहीं हैं। बुद्ध के प्रधान शिष्य सारिचुत्त, दोगल्लान की अस्थियाँ एक स्तूप में सुरक्षित रखी गयी हैं। ब्रिटिश शासकों ने दीर्घकाल तक इन्हें अपने संग्रहालय में रखा और १९४९ में हमें सौंपा।

सांची का महास्तूप बहुत ही प्रसिद्ध है। इसका व्यास लगभग १२० फुट का है; ऊँचाई ५४ फुट की है। इसका निमार्ण रेत के पत्थर से बिना खोखलेपन के हुआ है। इसके चारों ओर पत्थरों से बिछी हुई पगडंडी है। साथ ही इसके चारों ओर पत्थरों से निर्मित एक छोटा-सा प्राकार है। इस प्राकार में चार द्वार हैं। हर एक द्वार की ऊँचाई लगभग २८$^{१}/_{२}$ फुट की है। इन द्वारों पर बौद्ध जातक कथाएँ बिस्तृत रूप से चित्रित हैं। दक्षिण द्वार के समीप अशोक के धर्म शासन से संबंधित एक स्तम्भ खड़ा है।

ई.पूर्व २५० में अशोक सम्राट ने इस सांची स्तूप का निर्माण किया। इसपर जो नक्काशी की गयी, बिदेशियों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

खींचो अपनी तस्वीर

यह एक पारिवारिक सैर थी। एडविन लैण्ड अपनी सुस्मिता बेटी की तस्वीर लेकर इसलिए बहुत खुश था कि क्षण भर के जादू को उसने कैमरे में कैद कर लिया है। छोटी जेनिफर ने ताली बजाई और पिता की ओर आशा भरी नजर से देखा। वह तस्वीर को देखना चाहती थी जिसे उसके पिता ने अभी-अभी ली थी। लैण्ड भौचक रह गया। उसकी बेटी उसी समय तत्काल तस्वीर देखने के लिए ज़िद करने लगी। यह विचार उसके मन में पहले कभी नहीं आया था। जो भी हो, इस अबोध अनुरोध ने तत्काल तस्वीर निकालनेवाले कैमरे के अनुसंधान का मार्ग खोल दिया।

लैण्ड ने स्वयं कहा, तत्काल शब्द शायद अतिरंजन है, क्योंकि समय फिल्म रोल के चारों ओर के ताप पर निर्भर करता है। कमरे के सामान्य ताप में लो कंट्रास्ट चित्र दिखाई पड़ने में कुछ सेकेण्ड लगते हैं। हाई कन्ट्रास्ट चित्र में कई मिनट लगेंगे। उसने उपयुक्त उत्पाद को विकसित करने में विशेष ध्यान दिया।

तुम्हारा प्रतिवेश

जेट बादल

गरजते हुए जेट वायुयान उड़ते समय अपने पीछे एक सफेद धुंधला पुछल्ला छोड़ जाते हैं जो कुछ देर के बाद गायब हो जाता है। क्या तुम जानते थे कि यह वास्तव में बादल है?

यह इस प्रकार होता है। मोटर कारों, बसों तथा अन्य वाहनों के समान जेट वायुयान भी अपने पीछे गर्म गैसों और धुएँ का पुछल्ला छोड़ते हैं, जिसमें जल बाष्प का उच्च प्रतिशत मौजूद रहता है। जहाँ ३० डि.सेण्टिग्रेड ताप रहता है, उतनी ऊँचाई पर जल बाष्प बाष्पीकरण के पहले तत्क्षण छोटे-छोटे हिमकणों में बदल जाते हैं। इसीलिए यह सफेद पद-चिह्न, जिसे ''कॉण्ट्रेल'' या कण्डेनसेशन ट्रेल कहा जाता है, कुछ समय के पश्चात गायब हो जाता है। ''कॉण्ट्रेल'' चादर के समान एक बहुत बड़े क्षेत्र तक फैल सकता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

प्रेयरी कुत्ते

प्रेयरी कुत्ता, कुत्ता नहीं होता। क्या तुम्हें यह विचित्र-सा लगता है? पर यह सच है!

ये लघु प्राणी वास्तव में कृन्तक होते हैं जिनकी अधिक से अधिक ऊँचाई ३० से.मी.होती है। ये वास्तव में गिलहरी के रिश्तेदार हैं। इनकी आवाज कुत्तों के भौंकने के समान होती है, इसीलिए इन्हें यह नाम दिया

गया है। यह पशु अपना दिन खाने में अथवा अपनी कॉलोनी में दूसरों के साथ गप्प करने में व्यतीत करता है। रात्रि में वह अपने बिल में सुरक्षित रूप से सोता है।

प्रेयरी कुत्ता बड़े उपनिवेशों में रहता है, जिन्हें नगर या ग्राम कहते हैं। इन उपनिवेशों में ये छोटे-छोटे परिवार-समूहों में रहते हैं, जिन्हें कोटरी कहते हैं। एक विशिष्ट कोटरी में लगभग ७० प्रवेशद्वार होते हैं।

प्रेयरी कुत्ते पहले तो एक दूसरे को घूर कर देखते और दाँत किटकिटाते हुए तथा अन्त में अपनी पूँछ हिलाकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं।

अपने भारत को जानो

यहाँ कुछ सामान्य ज्ञान के प्रश्न दिये जा रहे हैं :

१. गाँधी सागर बाँध कहाँ स्थित है?

a) कोटा b) राँची
c) भाखड़ा d) गंगानगर

२. कौन-सी नदी थार मरुस्थल से होकर गुजरती है?

a) नर्मदा b) ताप्ती
c) गोदावरी d) सिन्धु

३. सिक्किम कब भारतीय संघ का २२ वाँ राज्य बना?

a) १९५५ b) १९७५
c) १९६५ d) १९८५

४. दिल्ली को केन्द्र-शासित राज्य कब घोषित किया गया?

a) १९५६ b) १९४६
c) १९६६ d) १९७६

(उत्तर ७० पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

ANANTHA PRABHAKAR DUTT

KALANIKETAN BALU

चित्र परिचय प्रतियोगिता, *चन्दामामा,* प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२),
डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०००९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

शिव भगत राम
हरिजन विद्यालय,
सदर बाजार, बैरकपुर,
कोलकाता-७००१२०.

विजयी प्रविष्टि

अलख निरंजन सीताराम।
अपनी मंजिल बाबाधाम।।

'अपने भारत को जानो' के उत्तर

१. कोटा.
२. सिन्धु.
३. १९७५.
४. १९५६.

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (HINDI) MARCH 2005 Regd No. TN/PMG(CCR)-594/03-05
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57 Licensed to post without prepayment No.381/03-05
Foreign - WPP No.382/03-05
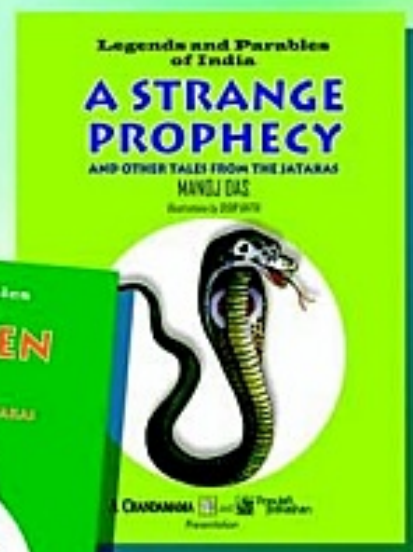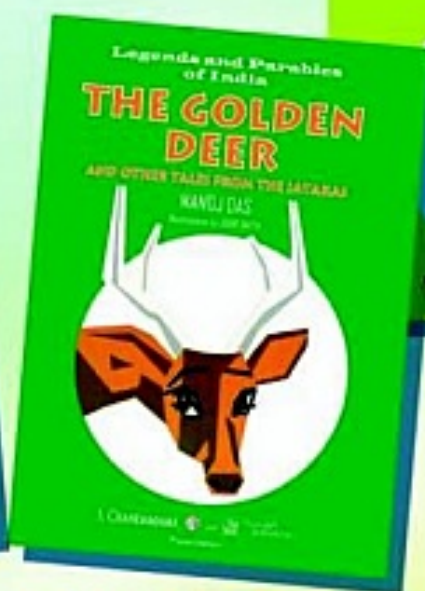
PCRA Page **Website : www.pcra.org**

जल, अमूल्य संसाधन

वीना के पिता के मित्र संजय, जो एक गैरसरकारी संस्था में वैज्ञानिक हैं, उनके शहर में जल-संरक्षण पर एक सेमिनार में भाग लेने आये हैं। वे समझाते हैं, ''मार्च २२ संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा के निर्देशन के अनुसार विश्व-जल-दिवस है । इसका प्रयोजन है जल-संसाधनों के संरक्षण के महत्व के प्रति जन-जागरुकता बढ़ाना। हमारी गैरसरकारी संस्था का लक्ष्य है मास मिडिया के कार्यक्रमों के द्वारा जनता को शिक्षित करना।''

''हमें जल-संरक्षण क्यों करना चाहिये?'' वीना पूछती है।

''जल इस ग्रह पर सबसे अधिक मूल्यवान प्राकृतिक संसाधन है। यद्यपि पृथ्वी की सतह का ७० प्रतिशत भाग जल से ढका है, इस जल का ९९ प्रतिशत से भी अधिक मनुष्य के उपयोग के योग्य नहीं है। और शेष कम भाग हमारी पहुँच से परे है ! पेय जल की मात्रा बहुत कम है और वह भी तेजी से घट रही है।''

''गोश !'' वीना आह भरती है ! ''मुझे यह नहीं मालूम था, अंकल ! जरा बताइये, मैं जल-संरक्षण के लिए क्या कर सकती हूँ?''

''बहुत कुछ'', अंकल संजय मुस्कुराते हैं । ''जल की बर्बादी को रोकना पहली आवश्यकता है। पौधों में पानी डालने के लिए पाइप के बदले कैन या बालटी का प्रयोग करो। इस तरह तुम बहुत जल बचा लोगी। अपनी कार को धोने के लिए भी ऐसा ही करना चाहिये।'' वे रुक जाते हैं और फिर कहना जारी रखते हैं, ''टपकनेवाली टोंटी इतना जल बर्बाद कर देती है जिसकी तुम कल्पना तक नहीं कर सकती। इसलिए इस्तेमाल करने के बाद सुनिश्चित कर लो कि तुमने ठीक से टोंटी बन्द कर दी है। यदि टोंटी रिसती है तो इसे तुरन्त मरम्मत करा लो।''

''मैं करूँगी। अब से मैं जल की एक बून्द भी नष्ट नहीं करूँगी!'' वीना वचन देती है।